॥ दशाश्रुतस्कंधसूत्रनी टीका तथा जंबुद्वीपप्रज्ञप्ति
सूत्रनी टीका कर्ता ॥

॥श्री शास्त्रविशारद जैनाचार्य मुनिराजश्री ब्रह्मर्षिकृत॥

॥ श्री सुधर्मगच्छ परीक्षा ॥

॥ उपजाति छंद ॥

वंदिज्जमाणा न समुक्कसंति। हीलिज्जमाणा न समुज्जलंति॥
दंतेण चित्तेण चरंति धीरा। मुणी समुग्घाइय राग दोषा॥१॥
(आवश्यक निर्युक्ति.)

आ प्राचीन ग्रंथ समस्त जैन बंधुओने उपयोगी
जाणी यथामति संशोधन करावी
गाम सायेण कच्छ निवासी
श्रावक रवजी देसरे मुद्रित करावी
प्रसिद्ध कर्यो.

श्री अहमदाबाद मध्ये
राजनगर प्रिन्टींग नामक पोताना मुद्राजय यंत्रमां
शा. मगनलाल हरीसंगे मुद्रित कर्यो.

संवत् १९६८ सने १९१२

किम्मत ४ आना.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सर्व हक्क प्रसिद्धकर्त्ताए स्वाधिन
राख्या छे.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पुस्तकप्रगट प्रयोजनार्थे बे बोल.

प्रिय वाचकवृंद! आ अनाद्यनंत संसारनी अंदर जब भ्रमण करता जीवने मनुष्यपणुं–आर्यदेश–अने आर्य कुळनी प्राप्ति थवी, तेमज सुदेव,सुगुरु, सुधर्मनो संयोग मळवो ए अति दुर्लभ छे! कदाचित् पूर्वकृत पुन्यनी प्रबळतावडे ते प्राप्त थाय तथापि सुदेव, सुगुरु, सुधर्म उपर प्रतीति थवी महान् दुर्लभ छे अने जो ते उपर पूर्ण प्रतीति थाय तो अवश्य जीवनुं कल्याण थाय छे एमां जरा पण शक नथी!

आ पंचम काळना प्रभावथी बहुश्रुत पूर्वधर महाराजाओना विरहथी, तथा धर्ममार्गमां अनेक मत मतांतर रूप फांटा पडवाथी अने शुद्ध प्ररूपक पुरुषो घणाज थोडा होवाथी, उन्मार्गदेशक एटले के उत्सूत्रनी प्ररूपणा करी स्वमत स्थापन करवामां कटिबद्ध थयेला, सूत्रनो भय त्यजी दइ पोतानी इछा मुजब नवी नवी आचरणाउं स्थापन करी मात्र मारुं तेज साचुं अने बीजा कहे ते खोटुं, आम बेधडक बोलवावाळा बहु जन थइ जवाने लीधे आ विषम समयमां कोनो कहेलो धर्म–बोध जिनाज्ञा सहित छे अने कोनो कहेल धर्म–बोध जिनाज्ञा रहित छे? आवी शंकाने जन्य जीवोना हृदयस्थळमां जन्म मळे ए स्वाभाविकज छे,

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ए शंकाने दूर करवाने माटे, तथा भव्यजीवो शुद्ध धर्म पामी शके ए माटे आ श्री ब्रह्माचार्यजी रचित लघु ग्रन्थ, प्राचीन तेमज प्रमाणयुक्त अमारा जोवामां आववाथी वर्त्तमान समयनी अंदर अति उपयोगी थइ रहेवाना लाक्तथी घणा (पुष्कळ) जीवोनुं हित सधाशे ए हेतुने ध्यानमां लइ आ ग्रंथ मुद्रित कर्यो (छपाव्यो) छे. हालना समयनी अंदर मनुष्यो शुद्ध धर्मनी शोध खोळ करी रह्या छे अने जमानो पण जाण-पणावाळो थतो जाय छे तेवा जमानामां आवा निष्पक्ष-पाति प्रमाणयुक्त ग्रंथ प्रसिद्धिनी खास जरूरज छे !

अनन्य श्रद्धाळु थवुं, पण अंधश्रद्धाळु न थवुं एज श्रेयस्कर छे. केमके अंधश्रद्धाळुओनुं मानवुं एवुं होय छे के--भले साचुं होय के जुठुं होय पण अमोए तो जे अंगीकार कर्युं तेने कदी छोडनार नथी. आम पकडेला गद्धापुंछनी पेठे आज कालनो केटलोक अंधश्रद्धाळु-दृष्टिरागी वर्ग अज्ञानताना वशे करीने सत्यप्ररूपक सद्गुरु तरफ धिःकारनी नजरथी जोतो थयो छे, के जे सुगुरु सत्यवक्ताना संटंक वचनोने हसी कहाडवा लागतो दृष्टिपथमां पडवा लाग्यो छे, ते वर्गने आ ग्रंथ अत्युपयोगी थशेज ! माटे विवेकी वाचकवर्ग दृष्टि-रागथी दूर रही तत्वग्राहिणी दृष्टिवडे आ ग्रंथने आधथी इति लगी वांची विचारी मनन करी शुद्ध

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तत्व संचय करवामां राग द्वेषना फंदमां न फसातां स्वपरना आत्मानुं कल्याण करशेज एवो अमने पूर्ण विश्वास छे! अने एम थशे तो अमारो प्रयत्न पण सफळज छे—मतलब के "दक्ष परीक्षक जो मळशे तो छे श्रम सफळ अमारो!"

आ ग्रंथनो विषय शुं छे ते तो वाचकवर्ग आद्योपान्त आ ग्रंथनुं अवलोकन करतांज आपोआप समजीज ले तेम छे, जेथी नाहक पिष्टपेषण करी कीमती काळनो व्यर्थ व्यय करवो ते अनुचित छे.

प्रिय पाठक महाशय! आ ग्रंथना कर्त्ता सौधर्मगछीय शास्त्रविशारद मुनिमहाराज श्री ब्रह्माचार्यजी के जेमनो जन्म माळवाना आंजणोठ नगरमां सोळंकी क्षत्रीवीर पद्मदेवराय पिता, तथा सीतादेवी माताने त्यां उत्तम महयोगें थयो हतो. अने जेमणे किशोरवयमांज पूर्वसंचित पुन्यप्रकृति संयोगवश पोताना भाइ साथे मातापितानी रजा मेळव्या शिवाय द्वारकाजीनी यात्रा करवा माटे प्रयाण कर्युं हतुं. "शुभात् शुभं जायते" ए कहेवत मुजब एवुं थयुं के मार्गे चालतां चालतां गिरनार पर्वतना प्रदेशमां पूर्व पुन्योदय प्रजावडे जैनाचार्यनो तेमने भेट थई. मुनीने वंदना करी पोते तेमनी अगाडी बेठा, एटले मुनिवर्ये हलुवा कर्मी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

योग्यजीव जाणीने शुरू धर्मोपदेशनो लाभ आप्यो. एथी ते वचनामृत पान करतां मनमां वैराग्यभावने जन्म मळ्यो, एटलुंज नहीं पण ते वैराग्ये सत्य वैराग्यनी दीक्षा लेवानी तेमने फरज पाडी के तेमणे पण द्वारका जवानुं द्वार बंध करी जन्मोद्धार करवानुं द्वार खोलवा मन दीधुं. धार्युं हतुं शुं अने थयुं शुं, "वाह! भवितव्या! तारी प्रबलता!" एटले के धार्यो हतो द्वारका दर्शननो लाभ अने शुरू चारित्रनो लाभ थयो. गुरुश्रीए नाम राख्युं ब्रह्ममुनि; केमके ते भविष्यमां परंब्रह्मज्ञानना वा परंब्रह्म (वीतराग) भाषित ज्ञानना ज्ञाता थनारा होवाथी प्रथमथीज ज्ञानदृष्टिवळे ते नामनुंज पद समर्प्युं. तदनंतर गुरुराजे पोताना बक्षेला नामने सार्थक करवा माटे मुनिधर्म योग्य क्रिया–अनुष्ठानना सूत्र (सिद्धांत–तत्त्व) नो अभ्यास कराव्यो, अने ते पछी तेमणे (पोते) अन्य महान् आचार्य पासेथी पोतानी प्रबळ बुद्धिना योगथी घणाज तत्त्वज्ञाननो संग्रह कर्यो अने समर्थ शास्त्र विशारद बिरुदवंत थया. एथी श्री बृहत्तपागच्छाचार्य श्री विजयदेवसूरिजीयें तेमने सूरिमंत्र अर्पी ब्रह्माचार्य नामथी भारतभूषण तरीके विख्यातिमार्गमां स्थिर कर्या. श्री विजयदेवसूरिना शिष्य श्री विनयदेवसूरि ते आ ग्रन्थकारना संसारिक संबंधमां भाइ

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

हता, ए मार्गना प्रतापी मजकुर आचार्यजी परम विमल वैराग्यधारक साक्षरोत्तम-विद्वान् नीवडी वैरागी जनोना मस्तकमौलि समान शोभापात्र गणाया हता. ए सूरिजीए दशाश्रुतस्कंधसूत्रवृत्ति, जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिसूत्रवृत्ति, पाक्षीसूत्रवृत्ति, प्रतिमास्थापना प्रबंध, सुमतिनाथजिनो रास, सैद्धांतिकविचार, पंचपर्वी व्याख्या, स्तवनो, सझायो, कुलक अने प्रस्ताविक काव्य वगरे वगरे घणा रच्या छे एम केटलाएकनी तो श्रवणज साक्षी आपे छे, (मात्र नेत्रो साक्षी आपे एटलीज इछा छे.) मजकुर आचार्यजी विक्रमनी पंदरमी सदीमां विद्यमान हता. तेमणे करेली त्रणे वृत्तियोने समर्थ गीतार्थोद्वारा संशोधन करावी श्री संघमां प्रचलित करेली छे, अने अनेक गद्यपद्यात्मक लेखो कायम करी चतुर्विध संघने आज्ञारी कर्या छे. ए पोते सौधर्मगछना हता एम अने उपर लखेल सर्व विना एमना करेला ग्रंथो उपरथीज प्रतीति मळे छे. एउंश्रीमां ऐतिहासिक ज्ञान प्रशंसनीय हतुं एम पण आ ग्रंथ कही आपेछे अने ते वांचवाथी अक्षरशः सत्यज जणाशे. ए आचार्यजी हाल परलोकमां विराजमान छतां तेमना मधुरवचनो आ लोकमां विराजमान रही समदृष्टिजीवोने कल्याण करी रहेल अने हवे पछी पण करो करे एवी अमारी इछा छे.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आ पुस्तक छपाववामां मारी स्वल्प मतिना योगे जे कंइ अक्षर कानो मात्रा मींडी वा अर्थविभ्रमताना लीधे रही गयेल होय तो ते विषे सज्जनो हंसवत् गुणग्राही थइ दोषने सुधारी वांचशे के जेथी अनंत लाभ थशे. कारण के "संत्यज्य सकलान् दोषान् गुणान् गृह्णन्ति साधवः" तथापि वाचकवर्गनी समक्ष दोष संबंधी त्रि-विधे मिथ्यादुष्कृत दउं छुं. अलम् विस्तरेण शुभमस्तु!

सं. १९६८ माघ पूर्णिमा } प्रकाशक.

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् ॥

श्रीसिद्धार्थनरेंद्रविश्रुतकुल—व्योमप्रवृत्तोदयः
सद्बोधांशुनिरस्तदुस्तरमहा—मोहान्धकारस्थितिः ॥
हप्ताशेषकुवादिकौशिककुल प्रीतिप्रणोदक्षमो
जीयादस्खलितप्रतापतरणिः श्रीवर्धमानो जिनः॥१॥

ॐ शान्तिः ॥ ३ ॥

आ उपरनुं काव्य ग्रन्थना अंतमां छे, परंतु छापवामां कांइक अशुद्धता थइ जवाथी अहिं मोटा अक्षरमां मुद्रित करेल छे.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

॥ ॐ श्री सद्गुरुभ्यो नमः ॥

॥ शास्त्रविशारद जैनाचार्य मुनिराज श्रीब्रह्मर्षि कृत-

श्री सुधर्मगच्छ परीक्षा ॥

(आर्या छंद.)

जयति जगदेक मंगल,-
मपहृत निःशेष दुरित घन तिमिरम् ॥
रविबिंबमिव यथास्थित,-
वस्तु विकाशं जिनेशवचः ॥ १ ॥

॥ चोपाइ ॥

वीर नमुं कर अंजलि करी, साधुतणा गुण मन संभरी;
साचा धर्म परिक्षाजणी, विगति कहुं कांइ गच्छतणी ॥१॥
वीरतणा गणधर इग्यार, नव गच्छ तेहतणा इम धार;
पांच गणधरना गच्छ पंच, पंच पंचसय मुणिवर संच ॥२॥
छठातणा अहुज सय साध, सत्तम गणधरना इम लाध;
अष्टम नवम गणधर बे मिलि, साधु छसय जणावे वली॥३
गच्छ आठमो ए सुविचार, नवमानो हिव कहुं विचार;
दसम इग्यारम बे गणधार, छसय साधु तेहनो परिवार॥४
इम इग्यारे गणधरतणा, नव गच्छनी जाणो विवरणा;
गच्छ एक गुरुनो परिवार, सूत्रपाठ अंतर अवधार ॥५॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अथ एक गणधर सवि कहे, एके आचारे सवि रहे;
जू जुआ सूत्रपाठ गच्छ दूआ, पुण आचारेनवि जू जुआ ॥६
वीरथकां गणधर नव सिद्ध, पछे गोयम केवल लिद्ध;
आपापणा साधु सवि जेह, आप्या सुधर्मस्वामिने तेह॥७
सौधर्मगच्छ एकज ते जाण, तेहतणी सवि माने आण;
सूत्रतणी एकज वांचना, अंतर पुण नहि आचारना॥८
केको जे साचा साधुनो, सघलो ते सौधर्मस्वामिनो;
कल्पसूत्रना वचन विमास, सांजली श्री सद्गुरुनी पास॥९

यतः—जे इमे अज्जत्ताए समणा निग्गंत्था विहरंति ए एणं सव्वे अज्ज सुहमस्स अणगारस्स अवच्चिज्जा ॥ अवसेसा गणहरा निरवच्चा वुच्छिन्ना ॥

भावार्थः—आजकालने विषे जे श्रमण निग्रंथ आ प्रत्यक्ष विचरे छे, ते तमाम भगवान् श्री सुधर्म अणगारना शिष्य संतानीया जाणवा; बाकीना गणधरो ते शिष्य संतान रहित जाणवा.

हिवणां जे दीसे गच्छ नाम, सूत्र न दीसे तेहने ठाम;
छता कहे तेहने पूछजो, मन संदेह सहू टालजो ॥१०॥
सामाचारिने आंतरे, जो गच्छ कहेवाय्ये पांतरे;
चउदहसय बावनतो जोय, सद्दहसे आचरणा सोय ॥११

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पुण ए वात न पंक्ति कहे, पाठ फेर जे गछ सद्दहे;
वीतरागनो मत छे एक, जगवई वृत्ति जोइ विवेक ॥१२॥

यतः—" यदेवमतमागमानुपातितदेवसत्य मितिमंतव्यमितरत्पुनरुपे क्षणीयमथाऽबहुश्रुतेन नैतदवसातुं शक्यते तदैवं जावनीयं, आचार्याणां संप्रदायादिदोषादयं मतजेदो जिनानां तु मतमेकमेवाविरुद्धञ्च रागादिदोषविरहितत्वात्"

जावार्थः—जेनोज मत आगमने अनुसारे होय तेज सत्य गणाय छे एवी रीते मानवुं जोइए—अने तेथी विपरीत जे होय तेने त्याग करवो जोइए. हवे अहिं बहुश्रुत विना कोइ निर्णय करी शके नहि, ते माटे आवी रीते विचारवुं जोइए के आचार्योंनी संप्रदाय आदि दोष वडे करी आ मतजेद छे, परंतु जिनेश्वरनो मत एकज अविरुद्ध होय छे, केमके राग द्वेषादि दोष रहित होवाथी तेओनो मत निर्दूषित गणाय छे, माटे तेज अंगीकार करवो जोइए अने तेनाथीज कल्याण थाय, पण जे जिनागमथी विरुद्ध होय ते त्याग करवो. स्वमत स्थापन रसिकपणाथी प्रवचन विरुद्ध परुपेलुं होय तेनो सम्यक्दृष्टि जीवे त्याग करवो जोइए.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

काउसग्ग चैत्यवंदननो फेर, दीसे किहां कोइ अधिकेर;
सूत्रे जेहनी हा ना नहिं, तिह एकांत न करीए सहि ॥१३
निरवद्यक्रिया संवेगीतणी, एक दीसे आपमति तणी;
तिहपुणआजविचारीकरी, सत्यकरोकूकुं परिहरी ॥१४॥
सूत्र अर्थछे शुद्ध आचार, सौधर्मगछ तेहनो अणुसार;
तेथी अवर मतंतर जाण, सूत्रअर्थ तिणे करो प्रमाण ॥१५
नवला गछ नवला आचार, तिणें म राचो एक लगार;
सौधर्मगछनी पाछो आण, जेथी पामो परम कल्याण ॥१६
एह परंपरछे निसदीस, वरस सहस ज्यांलगी इकवीस;
रहेशे सूत्र अर्थ आधार, जे पाछे ते साधु विचार ॥१७
नाम गछ ने सूत्र विरुद्ध, परंपरा तसु म गणो सुद्ध;
सूत्र विरुद्ध गछ जे आदरे, ते जिनआण भंग आचरे ॥१८
ठाणाअंगे एह विचार, सूत्र पंथ गछ रीति धार;
चउभंगी बोले जगदीस, ते जोइ मम करसो रीस ॥१९

यतः—श्री ठाणांगे ॥ चत्तारिपुरिसजाया पन्नत्ता तंजहा—धम्मंणाममेगे जहति णो गण ठितिं १ गणठितिमेगे जहति णो धम्मं. २, धम्ममेगे जहति गणठितिंपि. ३, एगे णो धम्मं णो गणठितिं. ४

भावार्थः—एक—एटले कोइक साधुतो एहवा होय

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

छे के, जिनाज्ञारुप धर्मप्रत्ये मुकी दे छे, पण पोताना गछमां करेली मर्यादाने मूकता नथी; जेमके कोइ आचार्य तीर्थंकरनी आज्ञाने एक बाजु राखी मर्यादा बांधी के बीजा गछवाला साधुने महाकल्पादि अतिशय श्रुत जणाववुंनही, ए आचार्यनी मर्यादा छे. माटे अमो बीजाने कांइ पण जणावीयें नहि एम माने, पण ए जिनेश्वरनी आज्ञा नथी. जिनेश्वरनीतो एवी आज्ञा छे के जो योग्य होय तो सर्व पुरुषो जणी श्रुत आपवुं पण अयोग्यने आपवुं नहि. मतलबके जिनेश्वरनो उपदेश योग्य पुरुष प्रते आपवाने मनाइ नथी, छतां गछांध थै जिनेश्वरनी आणा उल्लंघाय तो जले उल्लंघो पण अमे तो गछनीज मर्यादा राखीशुं, इम कहे ते पहेलो भांगो जाणवो. अने बीजो भांगो ए छे के गछनी मर्यादाने मूके छे पण जिनेश्वरनी आणा मूकता नथी, ए बीजो भांगो जाणवो. अने त्रीजो योग्यायोग्यनो विचार ते जिनआणा तथा गछमर्यादा ए बन्नेने मूके, ते त्रीजो भांगो जाणवो. अने चोथो तो विवेकपूर्वक कार्य करे, जेमके जिनेश्वरनी आणा तथा गछनी आणा बन्नेने राखी कार्य करे, ते चोथो भांगो जाणवो.

मुणि साहुणि श्रावक श्राविका, संघचतुर्विध सूत्रजथकां;
सूत्र अरथनी विणु परंपरा, जे दीसे ते म गणो खरा ॥२०

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सूत्र अरथ लोपीने जेह, परंपरा दाखे छे तेह;
जो सद्दहिये सूधा साध, तोनिन्हवनो स्यो अपराध ॥२१
पद अक्षर जिनआगमतणो,अभिनिवेश धरी लोपे घणो;
तेनिह्नव कहिये अजाण, वीतरागना वचन प्रमाण ॥ २२

यतः—पय अक्खरंपि इक्कं। सव्वन्नूहिं पवेइयं ॥
नरोएज्ज अन्नहा भासे। मिच्छदिठि सनिच्छयं ॥१॥

भावार्थः—सर्वज्ञ देवाधिदेवे परूपेला ने गणधरादिकनी परंपराथी आवेला जे पद तथा जे अक्षर तेमांथि कोइपण एक अक्षर तथा पद तेनी श्रद्धा करे नहि अने तेथी विपरित परूपणा करे ते जीव निश्चे मिथ्यादृष्टि जाणवो.

पूरव आचारजनी आण, केइ कहे करिये परमाण;
तेहतणो उत्तर मन धरो, आचारजनी परिक्षा करो ॥२३

यतः—पंच विहं आयारं। आयर माणा तहाय भासंता ॥ आयारं दंसंता। आयरिया तेण वुच्चंति ॥ १ ॥

भावार्थः—पांच प्रकारना आचार ते ज्ञानाचार १, दर्शनाचार २, चारित्राचार ३, तपाचार ४, वीर्याचार ५, ते प्रते पोते पालता तेमज यथार्थ सूर्यनी माफक प्रका-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

शता तेमज ते पंचाचार प्रति मुनियोने देखाडता, एहवा आचार्य जे होय अने विषयनी दुष्टता तथा कषाय दुष्टता तेथी छोडावनारा ते हेतुथी आचार्य भगवान शुद्ध परुपणा करी भव्यजीवोना तारक तेनेज आचार्य (भावाचार्य कहेवाय छे.)

आचारज पुण तेहज जाण, जे भाखे सुधो जिनआण;
आणविना आचारज जेह, कुपुरुषमांहे तेनी रेह ॥ २४

यतः-तित्तयर समोसूरी। जो सम्मं जिणमयं पयासेइ॥ आणं अइक्कमंतो। सो-कापुरिसो-न सप्पुरिसो ॥ १ ॥

भावार्थः-जे आचार्य जिनमतना रहस्य तथा तत्व पदार्थ ज्ञानना रहस्य-मूल सूतसार प्रते सम्यक् जे रूपे, जे भावे जिनेश्वरे कह्या ते प्रमाणे प्ररूपे ते तीर्थंकर समान गणाय. वली जे परमात्मानी आणाने तोडता नथी ते सत्पुरूष कहेवाय, अने पोतानी पूजा करवा माटेज जेनी प्रवृत्ति छे ते कुपुरुष एटले नादान, पोते डुबे ने बीजाने डुबाडे ते नाममात्र आचारज जाणवा.

नाम१स्थापना२नेद्रव्य३भाव४, आचारज चिहुंजेदे भाव;
अशुद्ध त्रण भांगा सूरिना, चउथे भाव धरो भावना ॥२५

भावसूरिना लक्षण एह, सूत्राचारे वरते जेह;
सूत्रपंथ जे वर्तें नहीं, अशुद्ध त्रिभंगी गणि ते सही ॥२६

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

यतः–से जयवं किं तिछयर संतिअं आणं णाइक्कमेज्जा उदाहु आयरिय संतिअं? गोयमा! आयरिया चउव्विहापन्नता तंजहा--णामायरिया १, ठवणायरिया २, दव्वायरिया ३, जावायरिया ४, तछणं जे ते जावायरिया तेसिं संतिअं आणं णाइक्कमेज्जा ॥

जावार्थः–हे जगवन्! शुं तीर्थंकर संबंधी आणा प्रते न उलंघाय के आचार्य संबंधी आणा न उलंघाय? उत्तर. हे गोतम! आचार्य चार प्रकारना छे, जेमके–नामाचार्य १, स्थापनाचार्य २, ऽव्याचार्य ३, जावाचार्य ४. तेमां जे जावाचार्य छे ते जिनेश्वरनी आणा प्रमाणे वर्तनार होवाथी तेओनी आणा ओलंघाय नहीं.

ते जावाचारजनी आण, तेनो लोप म करशो जाण;
नाम मात्र आचारज इस्रे, ते उपर मम राचो किमे ॥२७
जावाचारज ते जाखिया, सूत्र वचन जे पाले क्रिया;
सूत्र पखे जे किरिया करे, ते जांगा त्रणे अनुसरे ॥ २८ ॥

यतः–से जयवं कयरेणं ते जावायरिया जणंति? गोयमा! जे अज्ज पव्वइएवि आगम विहिए पयंपएणाणुसंचरंति ते जावायरिया

जेणं वाससएवि पव्वइए हुत्ताणं वायामित्तेणंपि आगमउ वाहिं करेंति ते-नाम-ठवणाहिं णिजइयव्वे।

भावार्थः-हे भगवन्! कोण भावाचार्य कहेवाय? हे गौतम! जे आचारज आजनो दीक्षित पण सिद्धांत विधियें करी पद, पदवर्के अनुसंचरे (चाले) ते भावाचार्य कहीये, अने जे सो वरसनो दीक्षित पण थइने आगमथी उलटो (आगमथी विपरीत) आगम बाह्य जे वर्ते ते नामस्थापनाचार्य साथे गणवो, एटले निर्गुण आचार्य ते नामाचारज, स्थापनाचार्य जेवा. तेनी आणा पालवी कही नथी.

भावाचारज जे गच्छ मांहे, ते सुधर्मगच्छ जोइ आराहे;
नाम मात्र गच्छगरज न सरे, जो परखी साचूं नादरे ॥२९
एक आण पाले जिनतणी, करे कल्पना एक आपणी;
तिणकारण गच्छपरखोसाच, रत्नभ्रमे[1] मत लेशो काच ॥३०
सोनानी परि परखी करी, ल्यो गच्छ साचो ने संवरी;
मुंड मेलावे गच्छ न कहाय, आणसहित थोडे गच्छ थाय।३१

यतः-एगो-साहु-एगावि-साहुणी। साव गो

1. भ्रम.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

य सड्ढीत्रा ॥ आणा जुत्तो संघो । से सो पुण अट्ठि संघाउ. ॥

जावार्थः–एक साधु, तथा एक साध्वी, तथा एक श्रावक, एक श्राविका, पण जो जिनेश्वरनी आणा पालनार होय तो संघ कहेवाय छे. सम्यक् प्रकारे कर्मने हणे ते संघ, तथा मिथ्यात्व कचराथी रहित थै वस्तुगते वस्तुनी श्रद्धा, परूपणा, प्रवर्तना, यथोचित मर्यादा कारक तथा पालक, स्वपक्ष परपक्षने विषे शासनना प्रजावक, तेमज आचार विचार, औदार्य, धैर्य, गांजीर्य, चातुर्य, दाक्षिण्य, विनय, विवेकादि गुण जेमां होय ते संघ कहेवाय छे. ते गुणहीन होय तो संघ न कहेवाय; परंतु हाडकांनो ढगलो कहेवाय छे.

जाव सूरि गछ आज्ञापाल, आपमतिसु संगति टाल;
आप मते जलुं जाणी करे, तो पुण जवसायर नवि तरे॥१२

यतः–जिणाणाए कुणं ताणं । नूणं निव्वाणं कारणं॥ सुंदरंपि सबुद्धिए। सव्वं जव निबंधणं॥

जावार्थः–जिनेश्वरदेवनी आणा प्रमाणे जे जव्य जीव वर्ते तो निश्चे ते प्राणी निर्वाणपद साधी शके छे. अने जे प्राणी मनोमति आपमतीये वर्ते तेनुं सर्व अनु-

ष्टान संसार वधारनार छे.

आज्ञा जंजिने त्रण काल, जिनपूजा मंडे सुविशाल;
तेहनुं पण फल पामे नहि, जुर्ज साख विचारी सही॥३३

यतः-आणा खंडणकारी । जइवि तिकालं महा विभूइए ॥ पूएइ वीयरायं । सव्वंपि निरत्थयं तस्स ॥ १ ॥

जावार्थः-वली जे जीव लोके त्रण काले मोटी विजूतिवडे वीतरागदेवनुं पूजन करे छे छतां जिनेश्वर-देवनी आणानुं खंडन करे छे अने वली मात्र उपरदृष्टिये वाहवाह कहेवरावबामांज आनंद माने छे, तेनुं सर्व अनुष्टान तुषखंडनवत् निरर्थक छे, एटले जेम फोतरां खांडनारने कमोदनो लाज मलतो नथी, तेम तेने पण अनुष्टाननो लाज मलतो नथी.

तप जप संजम शीलविनाण, तसुफलपामे जो हुवे आण;
आणविना पण ते न प्रमाण, आचारंगे एह वखाण॥३४

यतः-आणाणाए एगे सोवठाणा, आणाए एगे निरुवठाणा, एयंते माहोउ एयं कुसलस्स दंसणं इत्यादि.

जावार्थः-केटलाएक जिनाज्ञाथी विपरीत प्रवृत्तिमां

उद्यमी वर्तें छे. केटलाएक जिनाज्ञानुं फल प्रवृत्तिमां निरुद्यमी छे. ए बन्ने वात, हे मुनि! तारे म थाउ, एम कुशल (वीरप्रभु) नुं दर्शन छे. माटे जे पुरुष हमेशां गुरुनी दृष्टिमां वर्ततो होय, गुरु प्रदर्शित मुक्ति स्वीकारतो होय, गुरुनुं बहुमान करतो होय, गुरुपर श्रद्धा धरतो होय, गुरुकुलवास करतो होय, ते पुरुष कर्मोने जीतीने तत्व जोइ शके छे, अने एवो महापुरुष के जेनुं मन लगार पण सर्वज्ञोपदेशथी बहार जतुं नथी. इत्यादि—

आपमतिना लक्षण जाण, असूत्र लवतो न करे काण;
नवुं करे जूनुं ओलवे, आपमति ते निश्चे हुवे ॥ ३५ ॥
जूनुं नवुं जाणेवा तणी, विगत कहुं कांइ जे सुणी;
ते सांभलि कदाग्रह टाल, सुधी जिननी आज्ञापाल ॥३६
विरजिनेश्वर थया केवली, तेथी वरस चौदमे वली;
जमालिपहेलोनिन्हवथयो, कयमाणेकडेउथापीओ ॥३७
सोलम वरसे बीजो जोय, तिष्यगुप्त नामे ते होय;
छेल्ले जीव प्रदेशे जीव, ए कीधी स्थापना सदीव ॥ ३८
वीर वरतता थया ए बेव, मुगति गया पछे कहीशुं हेव;
बारम वरसे पामी मुगत, गौतम गणधरनी ए जुगत.३९
वीसे वर्षे सोहमस्वाम, वीर पछे गया शीवठाम;

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तेहना चाल्या मुनिनापाट, जिणेदेखाडीसाचि वाट ॥४०
चउसठ वर्षे जंबु सिद्ध, बालपणालगे शील प्रसिद्ध;
अठाणुं वर्षे वीरथी, स्वयंजव थयो धर्मसारथी ॥ ४१ ॥
प्रतिबूधो जिनप्रतिमादेख, शासनदीपाव्युं सविशेख;
मनकशिष्यने काजे कर्युं, श्री दशवैकालिक उद्धर्युं ॥४२
वीरथकी एकसो सित्तरे, जद्रबाहु गुरुगुणे अवतरे;
उवसग्गहरं स्तवन करेव, मारी निवारीढे तिणखेव ॥४३
दश निर्युक्ति नवी जिणे करी, सूत्र अर्थ युगता संचरी;
बसें चउदवर्षे वली जोय, त्रीजो निन्हव जगमांहोय ॥४४
थाप्यो अव्यक्तवाद विशेष, आसाढाचार्य सुर देख;
बसें पन्नर वर्षे स्थुलिजद्र, शील प्रमाणे लहे बहु जद्र ॥४५
अर्थ थकी पूरव जे चार, गया विछिन्न तेथी धार;
वरस बसें वीसे अवधार, चोथो निन्हव थयोविचार ॥४६
थाप्यो शुन्यवाद तिणे जाण, समुछेदनुं सुणी वखाण;
वरस बसें अठावीस थया, महावीरने मुगते गया ॥४७
पंचम निन्हव थयो तेणे समे, बे किरिया तेहने मतिगमे;
वीर थकी त्रणसें पांत्रीश, वर्षे थयो कात्रिकसूरीश ॥४८
अविनयवंत शिष्य परिहरी, गयो उज्जयनीपुर निसरी;
निगोदनो जेणे कह्योविचार, इन्द्र फेरव्योवसतीद्वार॥४९
वरस चारसें त्रेपन प्रमाण, बीजो कात्रिकसूरीश जाण;

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बेन सरस्वती वाली जिणे, गर्दभिल्ल उछेद्यो तेणे ॥ ५०
चिहुंसय सीत्तेरे विक्रमराव, थयो उज्जयनी नयरी ठाव;
सिद्धसेनगुरुश्रावककीयो, महाप्रभावकनोजशलीयो ॥५१
वरस पंचसय चउंवालीस, निन्हव छठो जाण जगीश;
जीव अजीव अने नोजीव, राशीत्रण तेणे कही सदीव॥५२
गुरु समजाव्यो पण नवि वळ्यो, आपमते अभिमाने छळ्यो;
वरस चोराशीने पांचसें, वयरस्वामी सुरलोकें वसें ॥५३
वीरथकी वरसे पांचसें, चउराशी अधिके वली तिसे;
निन्हव जाण थयो सातमो, गोष्टामाहील ते महातमो॥५४
तेणे थाप्यो ए मत वली, जीव कर्मयोग जेम कंचूवली;
अपरिमाण थाप्या पच्चखाण, जावजीवनुं लोपे ठाण.५५
वरसें छसें श्री वीरथकी, नव अधिके जाणो इवकि;
खमणा नाम दिगंबरथया, सहसमल्ल पायक थापिया. ५६
जिनकल्पीनुं लेइ नाम, तिणे मांड्यो मति परिमाण;
नारीने उथापी मुगति, न कहे केवलीने वली भुगति. ५७
बीजा बोल घणा फेरवी, ग्रंथ कर्या आपे मति लवी;
एटला लगे जे हुवा मति, ते मांहि नवि समकित रति. ५८
समकित विणुचारित्रजकांय, आगम एहवि साख कहाय;

यतः—नथ्थियचरित्तं सम्मत्त विहूणं। दंसणाउ

नइयव्वं ॥ सम्मत्तचरित्ताइ जुगवं । पुव्वंविय सम्मत्तं ॥ १ ॥

भावार्थः—सम्यक्त्व विना चारित्र जे जन्म मरण नाश करनार, ते सम्यक्त्व पाम्याविना चारित्रनो लाभ थाय नहि, अने दर्शन जे सम्यक्त्व ते जे जीवने उदयमां होय त्यां चारित्र होय, अने वखते न पण होय. सम्यक्त्व अने चारित्र बन्नेनो लाभ थाय तेमां पण प्रथम सम्यक्त्वनोज लाभ अने पछी उत्तम चारित्र नो लाभ थाय; माटे सर्वज्ञदेवनी आराधनाथी जे लाभ जीवने थाय छे, तेमां मुख्य हेतु तो सम्यक्त्वज जाणवुं, ते सम्यक्त्व अनंतानुबंधिकषायना नाश थवाथी सम्यक्त्व परमनिधान जीव पामी शके छे. सम्यक्त्व विना चारित्र नथी, अने चारित्र होय त्यां सम्यक्त्वनी भजना, अने बन्नेमां प्रथम सम्यक्त्व अने पछी चारित्र होय, माटे सम्यक्त्व विनातो एकडा वगरना मींडा माफक रखडवुं निगोदमां थाय छे.

छसें वीस वर्षे वीरथी, शाखा चार चंद्रसेनथी ॥ ५९ ॥
विद्याधर निवृत्ति नागेंद्र, चोथी साखा नामे चंद्र;
निवृत्ति विच्छि तिये गछ, विद्याधर नागेंद्र बे रही ॥६०॥
शाखा चन्द्रतणुं छे नाम, पण भेदनो नवि लहिए ठाम;

चंद्र थयो जेणे परिचालणी, मतिन्नेदे ते दीसे गणी॥६१
पण जे हुंता साधु अनेक, कुलशाखा नामे सविवेक;
ते सामाचारी आचार, न्नेदे नवि प्रीछीय लगार. ॥६२॥
वीरथकी एके मारगे, वरस आठसेंब्यासी लगे;
साधुतणे आचारे रह्या, पठे केटलाएक लहवह्या ॥ ६३॥
चैत्यवासतो ते आदरे, नवकल्पी पण नवि संचरे;
लोजे लागे थाप्या घणा, उजमणा तप नवलातणा ॥६४
साधुपंथ जे जुगता नही, ते करणी मांड्या सवि सही;
मुनिवर मारग दीसो थयो, लोकप्रवाहि वाह्यो थयो ॥६५
परंपरा थापी बहुपरे, ते हिव जीतमांहि विवहरे;
पण छे जीततणा बे प्रकार, ते जोवुं मन करी विचार॥६६
एक जीत पासत्था करे, साधुसंवेगो एक आचरे;
तिहां जीत पहेलो परीहरो, बीजा उपर आदर करो॥ ६७
तोपण साधु केटला रह्या, देवद्धीगणीछा गुरु लह्या;
नवसेंअसीवरसजोथया, सूत्रविछित्तियेतोबहुगया ॥६८॥
इमबहुआगमघटतादेखी, लिख्यालखाव्या ते सविशेखि;
परोपगारतणे कारणे, सासन राखेवाने गुणे ॥ ६९ ॥
संघ मेली शोधे जेटले, काल घणेरो थयो तेटले;
ते माटे सूत्रे कह्यो जोय, वायण अंतर ए पद होय॥७०॥
नवसयतन्नूंए दीसई, ए पद प्रगट विचारि जोइ;

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अरथवखाणुंसाचोतास, जेम थिरहुवे समकितवास ॥७१

वीरथकी नवसें त्राणवे, एक प्रकार सव पुण हुवे;

सतवाहनराय पुरपइठाण, न्यायरीति पाले ते जाण ॥ ७२

गोदावरीतणे पर तीर, सतवाहन संग्रामे धीर;

एहवो मोटो राजा गुणी, बहु देसे आज्ञा ते तणी ॥७३॥

असे उजेणी नगरी जोइ, बलमित्र जाणुमित्र नृप होइ;

जगनीसुततेहनोदीखीउ,कालिकसूरिअसेमंजसकिउ॥७४

मागी नवि अनुमति केहनी, राये रीस करी तेहनी;

आचार्यने दिसवट दीध, सूरि विहार तिहांथीकीध ॥७५

गया पुर पइठाण जेटले, राये सनमान्यो तेटले;

धर्म सांजले आदर करे, हियडे हरख घणेरो धरे ॥७६॥

अंतेउरने तप कारवे, आठम पाखी इम जालवे;

दिवराते पारणे आहार, जगतिजाव आणि सविचार ॥७७

पुण जोजो मन एह विचार, वीर तीरथें छे ए परिहार;

राजपिंड नवि लेवो सही, ते पुण लेतां तेणि पुर रही॥७८

पजुसण आव्युं ढुंकडुं, तो पडिउं एहवुं सांकडुं;

पांचमदिनजोइए इंद्रजाग,नहीपजूसणनोतिहांलाग ॥७९

तो राजा कहे जगवन् सुणो, नहि पले दिन पंचमितणो;

आघो पाछो एक दिन करो, एह वचन अम्हारुं धरो ॥८०

१ छे. २ समज वगरनुं. ३ श्री माहावीरस्वामीना शासनने विषे.

विमासतां नवि बेसे बंध, चोथतणी तो राखी संध;
प्रमाण कीध राय आदेश, कालिकसूरि चित्तनिवेश ॥८१

यतः—आसाढे पुण्णिमाए ठिया डगलादियं गेण्हंति, पज्जोसवणाकप्पंच कहेंति, पंचदिणा ततो सावण बहुल पंचमीए पज्जोसवेंति, खित्ताभावे कारणेण पणगेसु वुड्ढे दसमीए पज्जोसवेंति, एवं पन्नरसीए, एवंपणगवुड्ढी ताव कज्जति—जाव सवीसति मासोपुण्णो सोय सवीसति मासो भद्दवयसुद्ध पंचमीए पज्जोसवेंति. अह आसाढ सुद्ध दसमीए वासाखित्ते पविठ्ठा, अहवा जत्थ आसाढमास कप्पोकउ, तं वासप्पाउग्गं खेत्तं अन्नं च णत्थि, ताहे तत्थेव पज्जोसवेंति. वासं च गाढं अणुवरयं आढत्तं ताहे तत्थेव पज्जोसवेंति, एक्कारसीउ आढवेउ डगलादि तं गेण्हंति, पज्जोसवणाकप्पं कहेंति, ताहे आसाढ पुण्णिमाए पज्जोसवेंति, एस उसग्गो. सेसकाल पज्जोसवेंताणं, अववातो अववातेवि सवीसति—राय मासातो परेण अतिक्कमेउं ण—वट्टति, सवीसति

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat　　www.umaragyanbhandar.com

राते मासे पुणे जति वासखेत्तं-ण-लब्भति, तो-रोक्क हेठावि-पज्जो-सवेयव्वं, तं-पुणिमाए पंचमीए एवमादि पव्वेसु पज्जोसवेयव्वं, णो-अपव्वेसु. सीसोपुछति, इयाणिं कहं चउत्थीए अपव्वे पज्जोसविज्जति? आयरिउ भणति, कारणिया चउत्थी अज्जकालगयारिएण पवत्तिया. कहं भणतेकारणं? कालगायरिउ विहरंतो उज्जेणिंगतो, तब्भवासावासंतरंठिउ, तब्भणगरीए बलमित्तोराया, तस्सकणिठोभाया, भाणुमित्तो जुवराया, तेसिं भगिणी भाणुसिरीणाम, तस्सपुत्तो बलभाणुणाम, सोयपगतिभद्दविणीययाए साहूपज्जुवासति आयरेहिं सें धम्मोकहितो, पडिबुद्धो, पव्वावितोय. तेहिय बलमित्तभाणुमित्तेहिं कालगज्जो पज्जोसविते णिव्विसतो कतो केति आयरिया भणंति, जहा-बलमित्त भाणुमित्ता कालग आरियाण भागेणिज्जाभवंति, माउलेत्तिकाउं महंतं आयरं करेंति अप्पुछणादियं, तं च पुरोहियस्स अप्पत्तियं, भणति

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

य एस सुद्द पासंडो वेत्तावि तोहिं रणो अग्गतो पुणोपुणो उब्भावेंतो आयरिएण णिप्पठ प्पसिण वागरणो कतो, ताहे से पुरोहितो आयरियस्सपउठो रायाणं अणुलोमेहिं विप्परिणामेति एतेरिसतो महाणुजावा, एते जेणपहेणं गछंति तेण पहेणं जति रणागति एताणिवा अकमति तो असिवंजवति, ते ताहेणिग्गता एवमादियाण कारणाण अणतमेण णिग्गता विहरंता पतिछाणं णगरं तेणपछिता. पतिछाण समणसंघस्सय अच्छकालगेहिंसंदिठं, जावाहं आगछामि ताव तुप्रेहिं णो पद्योसवियवं, तछय सयवाहणो राया, सोयकाछगद्यं एतं सोउं णिग्गतो अजिमुहो, समण संघोय महयाविजूतीए पविठो, कालगद्यो पविठेहि य जणियं जद्दवय सुद्धपंचमीए पद्योसविद्यति. समण संघेण पडिवन्नं, ताहे रणाजणियं, तद्दिवसं ममलोगाणुवत्तीए इंदो अणुजाएद्याबोहेहित्ति, साहूचेतिते ण–पज्जोवासेस्स तो छठीए पद्योसवणा कज्जउ, आयरि

एहिं जणियं ण वट्टति अतिक्कामेउं, ताहे रण्णा जणियं, तो अणागय चउत्थीए पज्जोसविज्जति, आयरिएण जणियं, एवंभवउ, ताहे चउत्थीए पज्जोसवियं एवं. (इति निशीथचूर्णौ)

भावार्थः—आषाढ मासनी पुनमना दिवसे वर्षाकालसुधि वापरवायोग्य चीजो (उपकरण) तथा डगल, राख विगेरे ग्रहण करी चोमासीपुनमें चोमासीपडिक्कमणुं कर्याबाद, चोमासीलायक आ क्षेत्र छे के केम? ते विचारमां कोइये पुछयुं, तो ते साधु कहे के श्रावण वद पांचम पछि बने ते खरुं, तेम करतां जणायुं के क्षेत्रमां योग्यता नथी, एम विचारी पांच पांच दिवसनी वृद्धि त्यांसुधि करे के यावत् एकमास अने वीसदिवस एटले जाडवा शुदि पंचमीये पर्युषणा करे. शिष्यशंका (प्रश्न) कोइ कहे छे के वीसदिवसे कल्प तथा पांच पांच दिवसनी वृद्धिवमे कल्पस्थापनारीति संघनी आज्ञावमे विछेद पामी ते केम? उत्तर.—चूर्णिमांतो विछेदनी वातज जणाती नथी, विछेद एटले फरी तेनी उत्पत्ति संभवे नहि ते, अने अद्यापि क्षेत्रादिकनी योग्यता तथाविध न होवाथी तेम बनवा संभव छे, ने चूर्णिकार पण एज विधि

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

लखीछे छतां विछेद थै एम कहे छे, परूपे छे, ते बाबत समीक्षकोये विचार करवो जोइये, जे कोइ आ बाबतमां तित्थोगालीनुं नाम दे छे पण तेने लगती हकिकत तेमां नथी; माटे मध्यस्थ (तटस्थ) पुरुषोये यथार्थ चारेबाजु विचारी सत्य स्वीकारवुं. माटे आषाढपुनमे रहेवुं ते मूल मार्ग छे, तथाविधि योग्य क्षेत्र न मले तो अपवाद.

अपवादमां पण विहार करतांकरतां वीसदिवस सहित महिनो (५० मो दिवस) उल्लंघाय नहि. जो के क्षेत्र न मले तोपण छेवट जाड्वा शुद पांचमे तो अवश्य वृक्षहेठे पण पर्युषण करवुं. शिष्य प्रश्न. कइ तिथिये रहेवुं? उ० पूर्णातिथिये. पूर्णातिथि पांचम तेमां कांइ प्रमाण छे? उ० जुवो! निशीथसूत्र मूलमां,–पर्व ते पांचममांज कराय "पव्वेसुपज्जोसवेयव्वं णो अपव्वेसु" एटले पर्वमांज पजुसण कराय. अपर्वमां एटले 'चोथ' जे अपर्व तेमां पजुसण कराय नहि. करे तो श्यो दोष? आणभंग विगेरे दोष. आणभंग थवाथी प्रायश्चित्त "चउगुरु पच्छित्तं." त्यारे शिष्य पूछे छे के जेनुं प्रायश्चित लेवुं जोइये तो श्यामाटे ते करवुं जोइये. अने हमणां अपर्व जे चोथ कराय छे अने आप कहोछो के पर्व तो पर्वना दिवसेज थाय. ते पर्वदिवस तो पांच-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मनोज सिद्धांतमां कहेल छे ते मुकी अपर्व चोथ करवाथी आणाविराधक चारगुरुप्रायश्चित तो चोथ थायज केम? गुरु कहे छे के जाइ! तहारी वात खरी छे, पण कारणथी सपडाय.—बीजो उपाय न जडे तो पुष्ट कारणे करवुं पडे. तेवुं शुं कारण अने ते कारण श्या प्रसंगे बन्युं ते कहो. गुरु कहे छे कारणिया (एटले सकारणिक)जो होयतो कराय. जेम आर्यकालिकमहाराजे करी तेम. ते आ प्रमाणेः—कालकआर्यमहाराज विहार करता उज्जेणीनगरी पधार्या, त्यां वर्षाकालमाटे रह्या. (चोमासामाटे रह्या.) ते नगरीने विषे बलमित्र राजा तेनो कनिष्टभ्राता (नानोभाइ) युवराजपदनो धरनार भानुमित्र हतो, तेनी बहेन भानुश्री नामे हती, तेणीनो पुत्र बलभानुनामे हतो. ते बलभानु स्वभावथी शरल अने विनयवान होवाथी साधुनी सेवा पर्युपासना करतो, ते जीव योग्य जाणी आदरपूर्वक ते प्रत्ये धर्म कह्यो अने प्रतिबोध पामवाथी दीक्षा ग्रहण करावी. ते समय बलमित्रराजाने रीस चडवाथी जे कालकाचारज चोमासामाटे रहेला तेहने देशबहार (देशनिकालो) कर्यो. एहवां कोइपण सबल कारणथी ते बलमित्रराजाना राज्यमां चोमासी करी शक्या नहि ने त्यांथी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विहार करी पइठाणनगर चाल्या. ते पइठाणनगरमां पोताना संघाडाना जे साधु हता तेने पण संदेशो कहे-वराव्यो जे हुं आवुं त्यांसुधी तमे रहेवामाटे नक्की करशो नहि. संदेशानुं कारण एज के एकेक राजाना संबं-धथी (वखो तीसरुं पेदाथवाना संभवथी)हरकतपडे तो बीजा स्थानांतर जइ शकाय. ते नगरनो राजा जे सत-वाहन तेणे सारुं मान आप्युं, ने ते पइठाणनगरना सा-धुये पण आवकारसाथे नगरमां प्रवेश कराव्यो, अने ते-ज समयें कालकआर्ये कह्युं के भाद्रवा शुद पांचमनाज श्रीपर्व छे, ने ते वात पइठाणनगरना साधुये कबूल करी. ते प्रसंगे राजाये कह्युं के ते दिवस तो म्हारे इंद्रयाग थवानो तेथी साधुचैत्यनुं आराधन करी शकाशे नहीं, माटे छठनो दिवस राखो. आचार्ये कह्युं के पांचमनुं श्री पर्व उल्लंघाय नहीं. त्यारे राजाये कह्युं, चोथ करो. आवा कारणथी राजाना आग्रहवडे चोथ करी. परंतु चलाववाने माटे करी नथी एम स्पष्टरीते चूर्णिकार कही बतावे छे अने जे कोइ लखे छे के चोथ आर्यकालकमहाराजनी आज्ञाथी करिये छिये, तो कालकसूरिये नगरमां प्रवेश करतांज केम कह्युं के भाद्रवाशुद पांचमनां पजुसण छे, ने साधुये पण तेवात मान्य केमकरी. आवाबतमां चूर्णिकार

स्पष्टरीते लखे छे के, चोथनी बाबतनो आदेश राजाए कराव्यो छे, पण कालकाचार्यमहाराजनो आदेश तो चूर्णिकारे पांचमनोज लख्यो छे. चूर्णिकारे कार्तिकपुनमनी चोमासी कर्याबाद एकमना दिवसे विहार करवानी आज्ञा आपेली छे. आ उपरथी सार समजवानो के चूर्णिकार पोते चोथने अपर्व कहे छे, ने अपर्वमां पजुसण कराय नहि, अने करे तो प्रायश्चित कह्युं छे. माटे पर्वमांज श्रीपर्व कराय. एम खुल्ली रीते निशीथसूत्र १, निशीथचूर्णि २, कल्पनिर्युक्ति तथा समवायांग टीका ३, कल्पचूर्णि ४, दशाश्रुतस्कंध ५, तथा तेनी चूर्णि ६, तथा पंचासक हरिभद्रसूरिकृत तेनी टीका ७. विगेरेमां पर्वना दिवसे पजुसण पांचमनांज कह्यां छे. वली चोथ कर्यापछी पांचम न थाय, एम जे कहे छे ते खोटुं छे. कारण के जो फरी न कराती होय तो, पंचांगीवालाये मनाइ केम करी नहि? अने जे एक दिवस वधे एवी कुयुक्ति करी वमल (भ्रम)मां नाखेछे, ते पुरुषे अक्षर पंचांगीना बताडवा जोइए. हवेथी चोथज करवी अने पांचम नज करवी, एवा अक्षर कोइ स्थले छेज नहि, अने टीकाओ पण सर्वमान्य होय तेज सत्य जाणवी.

सुत्तं-जेभिक्खु पज्जोसवणाए ण पज्जोसवेति

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

इत्यादि ॥ जेभिक्खु अपज्जोसवणाए पज्जोसवेत्ति इत्यादि ॥ दोसुत्ताजुगवं वच्चंति। इमो सुत्तथ्थो पज्जोसवणा गाहा ॥ जेभिक्खुपज्जोसवणाकाले पत्ते ण पज्जोसवेति। अपज्जोसवणाएत्ति अपत्तेमतीते वा जो पज्जोसवेति। तस्सआणादियादोसा चउगुरु पच्छित्तं, एससमत्थो ॥ इति निशीथचूर्णौ.

आ सूत्रनो सारांस ए छेके अपर्वमां पजुसण न थाय अने जो करे तो प्रायश्चित्त, अने पर्वमां न करे तो प्रायश्चित्त; माटे आगल न थाय, तेम पाछल न थाय, पजुसणना दिवसे पजुसण थाय; एटले भाद्रवा शुद पांचमना दिवसेज पजुसण करवां. न करे तो चार गुरु प्रायश्चित्त. आ आज्ञा तीर्थंकरदेवे तेमज आचार्यभगवाने पण आपेली छे.

प्रश्न १—पजुसणना दिवसोमां ज्यारे सभासमक्ष श्री आर्यकालिकसूरि महाराजे पोतानाज मुखथी श्री कल्पसूत्र वांची संभळाव्युं हतुं त्यारे ते श्री कल्पसूत्रमां केटलां व्याख्यान (वखाण) कर्यां हतां? अथवा तो ते व्याख्याननी मर्यादा चूर्णिकारे बतावी छे के केम?

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

उत्तर १–आ बाबत संबंधी चूर्णिकारे श्री कालिकाचार्यजीने उद्देशीने कशी पण हकीकत दर्शावी नथी.

प्रश्न २–आर्यकालिकसूरिमहाराज एकज थया छे के जुदा जुदा थया छे?

उत्तर २–ए नामवाळा आचार्य एकज नथी थया, परंतु जुदा जुदा थया छे, ते ए के–एक कालिकाचार्य दत्तपुरोहितना मामा तरीके ओळखमां आवे छे एम योगशास्त्रनो बीजो प्रकाश साबिती आपे छे, अने ते कालिकाचार्यना जाणेज दत्तपुरोहिते तेज आचार्यने पूछयुं के–'महाराजजी! यज्ञनुं शुं फल मले छे!' आना उत्तरमां गुरुए कह्युं के–'यज्ञना फलमां नरक मले छे!' इत्यादि इत्यादि.

वली पूर्वश्रुतसमृद्ध आर्यकालिकाचार्य के जे आर्यश्यामाचार्यना नामथी पण ओळखमां आवे छे अने तेमणेज श्री पन्नवणा उद्धरेल छे एम श्री पन्नवणानी टीकाज साबिती आपी रहेल छे!

वली आर्यकालिकाचार्य सूक्ष्मनिगोद संबंधी व्याख्या प्रकाशक तरीके ओळखमां आवे छे एम श्री निर्युक्तिनी टीका तेमनी कथासहित साक्षी आपे छे!

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

वळी कालिकाचार्यजी गर्दभीलराजाना उच्छेदक तरीके ओळखमां आवे छे, एम श्री निशीथचूर्णि बतावी रहेल छे !

वळी बहुश्रुत कालिकाचार्य घणा शिष्यना परिवारवाळा छतां पोताना शिष्यो अविनीत होवाने लीधे एक शय्यातरने जणावी पोते एकलाज विहार करी बीजे स्थले पधार्या, ए वृत्तान्तथी ओळख आपे छे अने एनी साबिती श्री उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति आपी रहेल छे !

वळी श्री कालिकाचार्य राजाना आदेशने लीधे सकारणीक चोथ करनार तरीके ओळखाय छे अने ए विषेनी साबिती श्री निशीथचूर्णिमां विद्यमान छे !

प्रश्न ३–केटलाक महाशयो जाहेर करे छे के–वाचना तो श्री स्कंदिलाचार्यजीए शरु करी छे अने श्री देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणजीए ते वाचनाने पुस्तकारुढ करेल छे, एम आत्मप्रबोध ग्रंथमां छे ?

उत्तर ३–हा, ते वात तेमां छे !

प्रश्न ४–केटलाक कहे छे के–चोथना पजुसण करनारज राजासमक्ष श्री कल्पसूत्र वांची शके एवीज म-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

र्यादा छे. जो चोथ न करे तो श्रीकल्पसूत्र सभानी अंदर न वंचाय ए बाबतनो खुलासो केवी रीतिनो छे?

उत्तर ४—हे सर्मीक्षक! तमारा कहेवा प्रमाणे श्री कल्पसूत्रनी व्याख्यानी अंदर अने अंतरवाचनानी अंदर 'एगग्ग चित्ताजिणसासणंमि, पभावणा पूय परायणा जे॥ तिसत्तवारं निसुणंति कप्पं, भवण्णवं गोयम ते तरंति॥१॥ एटले के श्री वीरप्रभुजी गौतमस्वामीप्रत्ये फरमावे छे के—'हे गौतम! जे प्राणी, आ कल्पसूत्रने पूजी अने प्रभावनायुक्त एकाग्रचित्तनी सावधानी सहित आ जिनशासनने विषे विधिपूर्वक श्री गुरुमहाराजनी पासे एकवीश वखत सांभळे छे तो ते प्राणी अवश्य आ संसारसमुद्र तरीने मोक्षने पामे.' एम श्री जिनेश्वरे प्रथम गणधरदेवने कह्युं. ए कथन तथा कल्पसूत्रनी पूर्णाहुती समयनो आलावो (के जे अर्थसहित आगळ कहेवामां आवशे ते) तद्दन खंडित थइ जाय. माटे लक्षपूर्वक ए शंकानुं समाधान श्रवण करः—ज्यारे श्री कल्पसूत्र (श्री वीरप्रभु पछी ९८० वर्षे) पुस्त-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कारूढ कर्यो, ते पछीथी एवो ठराव कया आचार्ये कर्यो छे के चोथ करे तेज कल्पसूत्र वांची शके, अने ते शिवाय वांचे तो विराधक थाय. ते तमारेज विचारवानुं छे. मतलब के उपर बतावेल गाथाज बीजाने संजलावववानी साबिती स्पष्टपणे आपी रहेल छे के श्री कल्पसूत्र एकवीसवार सांजले तेनुं कल्याण थाय. (एम श्री जिनेश्वरेज प्रथम गणधरप्रत्ये फरमावेलुं छे.)

प्रश्न ५—ज्यारे श्री जद्रबाहुस्वामीएज श्री कल्पसूत्र रच्युं छे त्यारे ते पहेलां पजुसणपर्वनी अंदर (कल्पसूत्र रचायेल न होवाथी) शुं वांचवामां आवतुं हतुं ?

उत्तर ५—देवाधिदेव श्रीमहावीरस्वामीजीए श्री जिनेश्वरोनां चरित्र तेमज श्री वीरप्रभुना सत्तावीश भव जे पोतानुंज चरित्र जे प्रकाश कर्युं छे तेज श्री गौतमादि गणधरोए रचेल छे अने तेज मुजब परंपरागमना आधारे श्रुतकेवली श्री जद्रबाहुस्वामीजीए कल्पसूत्रनी रचना करेल छे, माटे गौतमस्वामीने उद्देशीनेज ते कल्पसूत्रनुं महात्म्य श्रीमुखे वर्णव्युं छे. ए वाक्यनो विशेष

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

साक्षितीमां खुद श्री कल्पसूत्रना अंतिम आला-
वामांज पुरावो छे केः—तेणं कालेणं तेणं स-
मएणं समणेभगवं महावीरे रायगिहे नगरे
गुणसिलएचेइए बहूणं समणाणं बहूणं
समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं साविआणं
बहूणं देवाणं बहूणं देवीणं मज्झगए चेव
एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पन्नवेइ एवं
परूवेइ पज्जोसवणाकप्पो नामं अज्झयणं
सअठं सहेउयं सकारणं ससुत्तं सअत्थं
सउभयं सवागरणं भुज्जो भुज्जो उवदंसेत्ति-
बेमि.' एटले के श्री भद्रबाहुस्वामी पोताना
शिष्यमंडळने कहे छे के—में जे आ कल्पसूत्रनी
अंदर त्रण अधिकार अर्थात् श्री जिनोनां चरित्र
१. थिविरावली अने २. साधुसमाचारीरूप वा-
चना प्ररुपेल छे, ते में मारी मनकल्पनाथी कहेल
नथी; परंतु श्री तीर्थंकरदेवना उपदेशथी में अ-
धिकार कहेल छे. मतलब के—ते काल चोथाआ-
राना अंतने विषे, राजगृहीनगरीना गुणशील
चैत्यने विषे वीरप्रभु समोसर्या, ते समये घणा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मुनिओ, घणी साध्वीओ, घणा श्रावको, घणी श्राविकाओ, घणा देवो अने घणी देवीओ, अर्थात चतुर्विधसंघनी सभा वच्चे जेवी रीते आ त्रण अधिकारवाळुं पर्युषणाकल्प श्रीमुखथी प्ररूप्युं, तेवीज रीते हुं (जम्बूस्वामी) पण तमो शिष्यवर्ग अने चतुर्विधसंघ आगळी कहुं छुं. तात्पर्य एज के श्री वीरप्रभुए कंइ एकलाएज कोइ एकांत खूणानो आश्रय लइ आ त्रण वाचना वांची के कही नथी, परंतु चतुर्विधसंघ सम्यक् दृष्टिवंतनी सभामां बिराजमान थइ स्वयं वाणी-वडे त्रण अधिकार गौतमादि गणधरदेव प्रत्ये प्ररूपेल छे. तथा जेम ते गौतम तथा सुधर्मास्वामीए जेवीरीते ए त्रणे वाचनाओने अमलमां मूकी तेवीज रीते हुं (जम्बूस्वामी) पण गुरुपरंपरा क्रमवडे ते त्रण अधिकार न्यूनाधिक कर्या विनाज कहुं छुं. ते त्रण अधिकारवाळुं पर्युषणा कल्पनाम अध्ययन 'सअट्ठं' कहेतां प्रयोजनयुक्त, परंतु निरर्थक नहीं. 'सहेउयं'—कहेतां हेतुसहित छे, एटले के जेम गुरुराजने अथवा वडीलोने,

१. आ व्याख्या टीकामां छे.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तथा जेनी निश्राये रह्या होय तेउश्रीने पूछया विना के तेउश्रीना आदेश (हुकम–आज्ञा) विना कंइपण काम करवुं कल्पे नहीं. केमके आचार्य महाराज ते संबंधी तपास करनार अथवा तेमनुं हित चाहनार होवाथी जेम आपणुं कल्याण थाय तेम करवाने समर्थ छे, माटेज तेउश्रीने पूछी, तेउश्रीनी आज्ञा मेळवी दरेक क्रिया–कार्य करवाथीज लाभ छे. जो तेम करवामां आवे तो ते कार्य करनार दशविधिसाधु चक्रवाल समाचारीनो पण आराधक थाय छे. 'सकारणं'– कहेतां साधुने सुखे संयमयात्रानी आराधना तथा समाधिना लायक तथाविध योग्य क्षेत्र न मले तो अपवादे आषाढी पुनम वीत्याबाद पण बीजाक्षेत्रनेमाटे तपास करतां पांचपांच दिवसनी वृद्धि करे. यावत् पर्वदिवस भाद्रवाशुदी पांचमें वस्ती न मले तो झाड नीचे रहेवुं, पण एक डगलुं आगल जवुं नहीं. ए विगेरे घणां कारण बताव्या छे, तेनुं नाम सकारण, पुनः 'ससुत्तं सअत्थं सउभयं'–कहेतां सूत्रसहित, अर्थसहित, उभय सहित, 'सवागरणं'–कहेतां पूछेला अथवा अण पूछेला पदार्थनी व्याख्या तेणे करी सहित.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

'गुज्ञो गुज्ञोत्ति' कहेतां वारंवार, 'नवदंसेइत्ति-बेमि'—कहेतां श्रोताजनना हितनेमाटे उपदेशकरे छे, तेमज जे प्रमाणे श्री तीर्थंकरदेवे ग्रण अधि-कार गणधर जणी (प्रत्ये) प्रकाश्या, अने ते श्री गणधरमहाराजे शिष्य प्रशिष्यने जे मुजब प्ररू-प्या तेज मुजब हुं पण चतुर्विधसंघ समक्ष ते ग्रण अधिकारज संजलावुं छुं. मतलब एज के आ परूपणा गुरुपरंपरावडे परंपरागमनी रीति प्रमाणे में परूपणा करी पण में मारी मतिकल्प-नाथी परूपणा करी नथी.

प्रश्न ६—महावीरस्वामी पोतानुं चरित्र पोते कही शके?

उत्तर ६—हा, कही शके. जो न कहे तो बीजा केम जाणी शके, किंतु पोताना मुखथी पोतानी प्रशंसा न करे पण चरित्र तो कही शकेज.

तो पजुसण चोथे कर्युं, राजातणुं वचन आदर्युं;
पचाससीत्तेरदिनराखवा, चउमासीचउदशदिनठव्या॥७२
तिणकारण चौमासी फेरवी, चउदसनेदिन अरहि ठवी;
पर्वतिथि एम अरहीकीध, परंपरागम नहु मन लीध ।७३

यतः—तथा चतुर्दश्यष्टम्यादिषु तिथिषूपदिष्टासु तथा पौर्णमासीसु च तिसृष्वपि चतुर्मासकति-

थिष्वित्यर्थः ॥ एवंभूतेषु धर्मदिवसेषु सुष्ठुतिशयेन प्रतिपूर्णोयः पोषधोव्रताभिग्रह विशेषस्तं, प्रतिपूर्णमाहारशरीरसंस्कारब्रह्मचर्याव्यापाररूपं पौषधमनुपालयन्संपूर्णं श्रावकधर्ममनुचरति.

भावार्थः—चउदश, आठम, पुनम एटले चोमासानी त्रण पुनम (आषाढीपुनम, कार्तिकपुनम, फाल्गुणनी पुनम) ए पर्व विगेरे पुण्यतिथीओने विषे, (इत्यादिक धर्मना दिवसोने विषे) अतिशय मनोहर अने संपूर्ण एवो जे पौषधव्रत अभिग्रह विशेष, तेने संपूर्णरीते एटले आहारनो त्याग, अने शरीरसंस्कारनो त्याग, ब्रह्मचर्यपालन, व्यापारत्यागरूप पौषधव्रतने पालन करता संपूर्ण श्रावकधर्मने आचरण करे छे. एवी रीते चोमासी त्रण पुनमनी सूत्रकृतांग भगवती, उत्तराध्ययन आदि सूत्रोना वृत्तिमां बतावेली छे तेने मुकी अने चौदशने दिवसे चोमासी करवानुं कर्युं. एवी रीते त्रण पर्वतिथी चोमासीनी फेरवी.

वरस नवसें चोराणुं हुए, कालकसूरी कालगत हुए;
आगे चालचलावी राय, जेण ऋषिपंचमी नवी लोपाय।४४
इम फेरव्या पर्व शास्वता, अठाही दोसे लोपता;
पांचम पुनिम आंजकरे, तो किम ते जिन आज्ञा धरे।४५

सूरिआण जिनआज्ञा पाय, बलवंते किमहि नवि थाय;
जिनआज्ञाजीहांलोपाय, विनय(मूळ)धर्मतिहांथीजाय.

यतः-आणाइ जिणंदाणं । नहु बलियत्त-
राहु आयरियाणा ॥ जिन आणा परिन्नठो ।
एवंगछो अविणीउय ॥ १ ॥

भावार्थः-जिनेश्वर परमात्मानी आणाथी खरेखर आचार्यनी आणा बलवान थइ शके नहि, अने जिनेश्वरनी आणाथी परिभ्रष्ट (विरुद्ध) थएला एवा पुरुषोनो जे गछ ते पण अविनीत पुरुषोनुं टोळुं गणाय, पण गछ गणाय नहि.

युगप्रधान कालिकसूरिने, कहे तेह न विचारे मने;
कालिकसूरिकवणगछथयो,कवणआचारतिणेथापीयो॥७७
तासु गछ जावडहरो सही, पच्चखाण वंदण तेणे नहि;
पहेलो पडिक्कमे इरियावही, सामायकविधि पछे कही॥७८
पाखी चउमासी चउदशे, करे पजुसण चउथे रसें;
करे प्रतिष्ठा जेणेवार, मांडे नांदि विशेष तेवार॥७९॥
पहेरे कंकण ने मुद्रडी, बाजुबंध बहिरखी जडी;
स्नान करे बंधे नवग्रही, सदश जुअलु पहेरे सही ॥८०
करे विलेपण रुडा गात्र, संघ संघाते करे जलजात्र;
मालारोपण ने उपधान, ते तो माने दोष निदान॥८१॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

महानिशीथ न ते सद्दहे, श्रावकने चरवलुं नवि कहे;
दिनप्रती देवीनी थुइ चार, उघे दशी प्रलंब विचार ॥९२
युगप्रधानकालिकगुरुतणो, काउसग्गकरेचिहुंलोगस्सतणो
अंतर पडिक्कमणे पुण जोय, एवाबोल घणातिहांहोय ॥९३
न करे बोल घणा जे इसा, युगप्रधान तिणे मान्या कीसा;
एहमांहे जेह काढे खोड, उजय भ्रष्ट मांहि ते जोड ॥९४
नविमानी तेणेजिनवरआण, कालिकसूरि कर्याअप्रमाण;
तोतिहांआराधकपणुंकिश्युं, पच्यापवाहनजाणेइश्युं ॥९५
केइ कहे कह्यो श्री महावीर, कालिकसूरी होशे गंजीर;
ते चोथे करशे ए पर्व, ए पण कल्पित उत्तर सर्व ॥९६॥
सूत्र न कालिकगुरुनुं नाम, तो किम कहीए पजुसणठाम;
जाण हशे ते जोशे सूत्र, पाप जीरु टालशे उसूत्र ॥९७॥
पाट सत्तावीशमांहे नहीं, कालिकसूरी विचारो सही;
जावरूहरातणा गछ टाल, पाट नाममांहे म निहाल ॥९८
पण छे लोक कदाग्रह जर्यो, लीधा बोल कहे अनुसर्यो;
होशे विवेकी ते जाणशे, पोतानो मत नवि ताणशे ॥९९॥
जिनजाषित आगम अनुसार, करे थापना सूत्र विचार;
तेहतणा सवि सरशे काज, लेशे अविचलपदनुं राज॥१००
कल्पे अरहुए पण जोय, दश पंचक पण रहेवो होय;
संवछर छे पंचमी सही, ततो आघुं पाछुं नहि ॥१०१॥
काल विशेषे घटता थया, पूर्व अल्पमात्र कांइ रह्या;

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सहस वरसे पाम्या विछेद, सत्यमित्रथी एहज भेद॥१०२
सहस अठोतेर वरसें जाण, वीर पछी पोषालमंडाण;
वीरथकी वरसे चउदसे, चउसठ अधिके जाणो रसे१०३;
वड हेठे वडगच्छ थापिया, चउरासी आचारज किया;
ते चउरासी गच्छ जाणवा, वडगच्छाना मन आणवा ॥१०४
तेहनी सामाचारी एक, तेह मांहि नव भेद अनेक;
वरूपीपलसीद्धांतीजोय, बोकडीआजाखडीयाहोय॥१०५
हारेजा जीरावल नाम, एवमादि चउरासी ठाम;
एक उपाध्याय अलगो हतो, कालें गुरुपासें पूछतो॥१०६॥
तेहे पण आचारज कीधो, पंचासीमो गच्छ थापीयो;
तेथी केटले काले जोय, राजसभामां चर्चा होय ॥१०७॥
कंस पात्र गाथी जीकली, खरतर नाम ठव्यो तिहां वली;
चिहुंत्तरअधिकवरससयसोल, कीधोआचारणादंदोल१०८
बोल एकसोने चोवीस, फेरे जिनवल्लभ सूरीस;
वली अनेरा गच्छ उसवाल, कोरंटा संडेरा वाल ॥१०९॥
धर्मघोष नाणा पलिवाल, बे वंदणिक भिन्नावाल;
विन्नावालअनेब्रह्माणिया, मलधाराआदिकजाणीया॥११०
एहनी उत्पत्त नवि जाणीये, अणदीठे कशांथी आणीये;
अणसांजल्युंअदीठुंकहे, तेनरअतिघणपातिकलहे ॥१११
वरस [1]सोलसें ओगणत्रीस, पुनमगच्छ थाप्यो जगीश;

१. वीरसंवत.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चउरासी अधिके सोलसे, वरसे अंचलगच्छमति थर्से ॥ ११२ ॥
घणा बोलना अंतर कर्या, ते पण घणे जणे आदर्या;
रजोहरण अने मुहपत्ति, श्रावकने नवि आपे छति ॥ ११३ ॥
श्रावकने पडिक्कमण न कहे, छ आवश्यक नवि सद्दहे;
पाखी आठमगणत्री करे, इम अंतरअतिघणआचरे ॥ ११४

यतः—बारह चउदोत्तरये । अंचलिया तहय आगमा जाणिया ॥ इत्यादि.

जावार्थः—विक्रम संवत १२१४ वर्षे अंचलगच्छ तथा आगमिगच्छ थयो, इत्यादि.

वरस सत्तरसें बीसे ठाम, आगमगच्छ धराव्यो नाम;
त्रण थुइ गणत्रीए पर्व, पडिक्कमणे अंतर छे सर्व ॥ ११५ ॥
पोसहमांहि अंतर घणो, अधिकमासे पज्जुसण तणो;
योगविधि नांदि फेर घणा, मन विमास जुउ तेहतणा ॥ ११६ ॥
वीरथकी अवधारो मने, वरस सत्तरसें पंचावने;
चित्रावालथकी नीकल्या, तपागच्छ नामे सांजल्या ॥ ११७ ॥

यतः—बारस पंचासीए । छंडिय निय निय गुरूण मज्जायं ॥ विजापुर नयरंमिय । तवा मयं देवजद्दाउ ॥ १ ॥

जावार्थः—विक्रम संवत् बारसें पंचासीमां (१२८५)

पोतपोताना गुरुनी मर्यादा छोमी, एटले चैत्रवालगच्छ-ना जे आचार्यो तेनी मर्यादा तोमी—चैत्रवाल गच्छथकी अलग थइ विजापुर नगरनें विषे देवजडथकी तपामत प्रगट थयो.

तिणे[1] गच्छआचरणा विज्ञान, नहीं मात्रारोपण उपधान;
श्रावकने पण नहीं चरवलो, इत्यादिक अंतर सांजलो॥११८
तसु समाचारी नवि करे, सूत्रपंथ पण ढीलो धरे;
परंपरा मुख थापे घणी, न जाणीये ते किणही तणी ॥११९
सूत्रअर्थने कूमो देखी, जो कोइ पूछे सविशेखी[2];
परंपरानुं लेइ नाम, लोकतणुं मन आणे गाम ॥ १२० ॥
लोक न जाणे ते परे इसी, परंपरा दाखे छे कीसी;
परंपरा तो तेहज खरी, जे जिनवर गणधर आदरी॥१२१
पण जे थापे आपापणी, तेहने माथे कोइ न धणी;
तेतो डाह्या माने केम, सूत्र विचारी जुन एम ॥ १२२॥

यतः—जा जिणवरेहिं भणिया । गोयममाईहिं धीरपुरिसेहिं ॥ सा—सच्चचिय मेरा । पालियव्वा पयत्तेणं ॥ १ ॥

भावार्थः—जे मर्यादा जिनेश्वरोए कही अने गौत-

१. चित्रावालगच्छने विषे. २. विशेषे करीने.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मादिक धीरपुरुषो (गणधरो) ए जाखी, तेज मर्यादा साची मानवी अने तेज मर्यादा प्रयत्ने करी आदर करवायोग्य (उपादेय) छे, अने तेथीज स्व परनुं कल्याण थाय छे.

संवत पंदर पंचाशीए, क्रियातणी मति आणी हिये;
थया ऋषीसर किरीयावंत, वैरागी देखीता संत ॥१२३॥
ते मत साचो कहे आपणो, बीजाने उथापे घणो;
घणा पाट देखामे जणी, परंपरा थापे आपणी ॥ १२४ ॥
न कहे साधुपणानी विगत, पाट नामनी थापे युगत;
पण जे जाण हुवे ते जोय, साधुपणाविणु पाट नहोय।१२५
गुरु लोपी पापी सहु कहे, तो कां ढांकी अलगा रहे;
सहुनुं माथा शिरुं पोषाल, ते ढांडी कां पड्या जंजाल।१२६
जो कहे ते आचारे हीण, तो पाट नाम कां थापो लीण;
जो गुरु तो निंदो कांइ तास, सेवो तेहनो गुरुकुलवास।१२७
साधुतणा विण दाखे पाट, तेज म जाणो सूधी वाट;
जो ते सुधा गुरु जाणीया, तो लोपी कां अलगा थया।१२८
गुरु लोपंता पातिक बहु, इम मुख लोक कहे छे सहु;
इमतो प्रत्यनीकपणुंथाय, तो केमजिनमतआराधाय।१२९
सूत्र समाचारि जे रहे, तेने निगुरा निगुरा कहे;
ते उपर सांजळो विचार, मनमाणो आमलो लगार ॥१३०

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जे माने जिनवरना वयण, तेहना विहुंपरे निर्मल नयण;
साचलीपरे ते सगुरासहि, जगगुरुनी जिणेआज्ञावहि ॥१३१

यतः–आगमं आयरं तेणं । अत्तणो हिय कंखिणा ॥ तिछनाहो गुरुधम्मो । सव्वे ते बहु मन्निया ॥ १ ॥

भावार्थः–पोतानुं हित इछनारा पुरुषोए आगमप्रत्ये बहुमानपूर्वक आदर करी श्रद्धान करवुं, अने जे पुरुष ते प्रमाणे करे छे तेणे तीर्थंकरनुं तथा गुरुनुं तेम धर्मनुं पण बहुज मान कर्युं गणाय.

जे कोई इवणाने समे, किरीया मारग रुडे रमे;
तिणतो आपणा गुरुनो संग, लोप्या दीसेछे बहु भंग॥१३२
ते गुरुने वंदे पण नहि, जे वंदे तसु वारे सहि;
पासत्था उसन्ना कही, तसु अवगुण बोले उमहि॥१३३॥
तेहनी दीक्षा व्रत उच्चार, वली करावे बीजी वार;
वली प्रतिष्टे प्रतिमा जाण, नविमाने आदेश प्रमाण।१३४
तेह तणी न करे थापना, नवि आणे गुरुनी भावना;
श्रावक जे समजाव्या तेणे, तेहने पण स्वामी नवगणे।१३५
तसु मांरुलि न करावे क्रिया, तो ते कहोकेमगुरुजाणिया;
मारी मात तो वंध्या केम, ए उखाणो जोवो जेम॥१३६

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सूत्रे कह्या करंडा चार, राय[१] शेठ[२] गणिका[३] चर्मकार[४];
एह समा आचारज कह्या, सुगुरुतणे वचने सद्दह्या॥१२७

यतः—चत्तारि करंडगा पन्नत्ता तंजहा. राय करंडगे[१], गाहावइकरंडगे[२], वेसाकरंडगे[३], सोवाग करंडगे[४]. एव मेव चत्तारि आयरिया पन्नता तंजहा. राय करंडग समाणे[१], गाहावइ करंडग समाणे[२], वेसा करंडग समाणे[३], सोवाग करंडग समाणे[४] ॥

भावार्थः—हे भगवन्! करंडीया केटली जातना छे? हे गौतम! चार प्रकारना. ते आ प्रमाणेः—प्रथम करंडीयो राजानो—ते बाहारथी रलियामणो अने अंदर पण तेवोज उत्तम हीरा, माणेक, पन्ना तथा सोनाना आभुषणथी रलियामणो होय छे. बीजो करंडीयो शेठीयानो—बहारथी देखावमां ठीक ठीक, पण अंदर सारा पदार्थोथी संपूर्ण भरेलो होय छे. त्रीजो करंडीयो वेश्यानो—तेमां आभूषण बहारथी भपकाबंध अने अंदरथी पोल, ढमढोल खाली चळकाटथी लोकोने फंदमांज पाडवा सारु होय छे. अने चोथो करंडीयो चंडालनो—ते बहारथी पण चांमडानो अने अंदर पण केटलाक हाडकां

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तथा चांमडाना कटका तेणे करी संपूर्ण होय छे. तेम गमे तेटलो धनवान् चंडाल होय, तोपण रात दिवस जातनो धंधो चांमडाना वेपारनोज होय छे, तेवी रीते आचारज पण चार प्रकारना जाणवा. जेमके, बहारथी शुद्ध, अने अंदरथी पण आचारे शुद्ध. १, अने कोइ बाह्यथी आचारे मंद, पण अभ्यंतरथी श्रद्धा तेमज परूपणा शुद्ध करी अनेक भव्य जीवोने तारनार. २, अने कोइक बहारथी लोकने डफाण बतावनार, अने अंदर श्रद्धाहीन, शुद्ध परूपणाना वेरी, अने निर्गुणी, दुष्ट विषय कषायथी छाकटा बनेला, जेनी छाती पछ्रनी माफक होवाथी आगमरस प्रवेश करी शके नहीं, बीजाने पण तेवाज पोताना सरखा मदांध करावनारा. ३, अने कोइक चंडाल जेवा तेतो सर्वथा त्याज्य, जेनुं दर्शन करवाथीज अकल्याण थाय, तेवानी क्षण मात्र पण संगति करवी नहि. वली आ प्रसंगे महानिशीथसूत्रना अध्ययन तथा तेनी चूलिकाना अंतमां गछ कोने कहीये, अने गछना लक्षण विगेरे हकीकत छे. ते जाणमां लेवानी बहु जरुर छे, वली सावद्य अने निरवद्यनी समजण माटे बहुज समजाव्युं छे. महानिशीथसूत्र परम रत्न छे, जे सांभलवा माटे सर्वथा मनाइ करे छे, पण तेमांनी केटलीक बाबतो सांभलवाथी दुरा-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

ग्रहनो नाश अने सम्यक्त्वनो वास थाय छे, किं बहुना. तथा महानिशीथसूत्रमां उपधानविधिनी हकीकत छे ते कया कया सूत्रनी छे; ते बीजा सविस्तर त्यां आपेली छे. जे उपधानविधि करे छे तेमां करेमिजंते तथा वांदणा तथा वंदितासूत्र तथा पच्चखाणसूत्रना उपधान मूकी फक्त नवकार १, इरियावही २, लोगस्स ३, शक्रस्तव (नमोत्थुणं) ४, पुक्खरवरदी ५, सिद्धाणं बुद्धाणं ६, आटलामां आवश्यकना उपधान थाय छे; एम कोइ माने छे, परंतु तेम मनाय नहि; कारण के तेमां सामायक, (करेमिजंते) वांदणा, वंदित्तु, पच्चखाण, आ चार आवश्यकना उपधानतप वह्या विना संपूर्ण आवश्यकना उपधान मनाय नहि. अने मात्र चैत्यवंदनविधिना उपधान कहो तो मात्र चैत्यवंदननी विधिना उपधान गणाय, पण आवश्यकना गणाय नहि. विगेरे विगेरे हकीकत योग्यगुरु गीतार्थ पासे समजवाथी अतिनवज्ञान लाभ प्रगट थाय छे.

ए चिहुंनो जाणी सुविचार, कहेवानो कीधो परिहार;
शुरू करंडा नवि छंडाय, अशुरूना किम पाट कहाय॥१३८
जो कहे ते जाणया मठपति, क्रियाहीण ने असंयती;
ते न कहे सूधा धर्म वाट, तो तेना कांइ नास्योपाट॥१३९
जो कहे सामाचारी एक, तेणे देखाड्या पाट विवेक;

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तो ते जुओ चित्त विमास, मम भूलो इण वचन विशास ॥१४०॥
सुधर्मनी आचरणा जुइ, एहनी परे अनेरी हुइ;
सूत्रवचन जोतां घणुं फेर, जेटलो अंतर सरसव मेर ॥१४१॥
एक कहे वहीये उपधान, एक कहे अविधी निधान;
पोसह एक चिहुं पर्व कहे, सदाकाल केइ सद्दहे ॥१४२॥
एक पोसहमां जमण न कहे, जल पीवुं पण नवि सद्दहे;
एक थापे जिमवो ने वारि, बहु अंतर पोसह उच्चारि ॥१४३॥
वळी जू जूआ थापे पर्व, आठम पाखि आदिक सर्व;
अधिकमास पज्जूसण घणा, दिसे जगमांस विगछतणा ॥१४४॥
सामायिक उचरतां भेद, योग नांदिविधि घणा विभेद;
एकउदिक तिथि करे प्रमाण, पडिक्कमणा भेदाइक जाण ॥१४५॥
गणतीयें एक पर्व कहंत, पडिलेहण बहु अंतर हुंत;
एक कहे साधु प्रतिष्टा करे, गृही करे इक इम उच्चरे ॥१४६॥
देव वांदतां अंतर घणा, थुइ तिन्हि ने चारह तणा;
पडिक्कमणे पच्चखाणे भेद, सद्दहणाना घणा विभेद ॥१४७॥
एक कहे नारी न पूजे देव, अंतर गुरुवंदन बहु भेव;
सामायिक उत्तरासंग कहे, वार बे अधिकुं नवि सद्दहे ॥१४८॥
रजोहरणने वली मुहपति, श्रावकने नवि थापे छति;
एकलुं कारे पण अंतरो, आपमते ते पण आचर्यो ॥१४९॥
एवमादि परि कहुं केटली, जग मांहे दीसे जेटली;

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

बहुगछना जसु परिचय हशे, ते सांजळी अंतरजाणशे।१५०
मांहोमांहे मंडे वाद, एक एकनो उतारे नाद;
एक एकने खोटा उच्चरे, परदरशणी सखायत करे॥१५१॥
जो हुइ सामाचारी घणी, तो कां थापे आप आपणी;
पण जोजो छोरी मन राग, वीतरागनो एकज माग।१५२

यतः—मूढाणं एस ठिइ । चुक्कंति जिणुत्त-वयण मग्गाउ ॥ हारंति बोहिलाजं । आय-हियं नेव जाणंति ॥ १ ॥

जावार्थः—मूढ एटले, मूर्ख माणसनी एवीज टेव छे के, जिनेश्वरे कहेल जे आगममार्ग तेथी चूकी जाय छे अने बोधिबीजने हारे छे. आत्महितने तो जाणताज नथी, केमके तेओनी एवी स्थिति होय छे; माटे मूढवृत्तिने त्याग करी जिनेश्वरनी आणाने आरा धवी के जेथी कल्याण थाय.

यतः—जंकिंचि अणुठाणं। जिणंद आणाए बहु फलं होइ॥ जह वडतरुव बीयं। वित्थारं लहइ वुहंते ॥ १ ॥

जावार्थः—जे कोइ अनुष्ठान (क्रिया) जिनेश्वरनी आज्ञापूर्वक थाय, तो ते क्रिया बहु फळ आपनारी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

थाय छे. जेम वडवृक्षनुं बीज नानुं पण क्रमे क्रमे वृद्धि ने पामे छे, तेम आणापूर्वक करेल क्रिया पण विस्तार वाळा फलने आपे छे. केमके थोडीपण क्रिया आणा सहित करेल होय तो पापना समूहने नाश करे छे, अने आणारहित पूजा, पच्चख्खाण, पोसह, उपवास, दान, शीलादि सर्व क्रिया निरर्थक कासकुसुम, सेलडी कुसुमनी माफक थाय छे. तेनाथी कांइ फल थतुं नथी.

यतः—सम्मत्त रयण भट्ठा । जाणंता बहु विहावि सत्थाइ ॥ सुद्धा राहण रहिया । भम्मंति तत्थेव तत्थेव ॥ १ ॥

भावार्थः—सम्यक्त्वरत्नथी भ्रष्ट थएला कदि बहु शास्त्रोने जाणता होय तोपण शुद्ध आराधना (सेवना) ए करी रहित जे होय ते तिहांने तिहांज भमे पण तेओनुं निस्तार थाय नहि, केमके धर्मनुं मूल सम्यक्त्व छे, एवो उपदेश देवाधिदेवे आपेलो छे. ते सांभली बुद्धिमान् पुरुषे दर्शनथी हीन थयेला एवा पासत्था, ओसन्ना, कुशीलीआ, संसत्ता अने अहछंदा तेओनो संग त्याग करवो, अने तत्वदृष्टिवाला जिनेश्वरनी आणारूप मुगटने धारण करवावाला, शुद्ध निर्जरपणाथी उपदेश देवावाला, विधिमार्गना खपी, विधि

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

उपर बहुमान करवावाला, एवा पुरुषरत्नोनो संग करवो जेथी आराधकपणो थाय. परंतु पुन्यना उदय-थी ते जोग मले.

यतः—धन्नाणं विहियोगो। विहिपक्का राहगा सया धन्ना ॥ विहि बहुमाणा धन्ना। विहि पक्ख ब्भदूसगा धन्ना ॥ १ ॥

भावार्थः—भाग्यवान् पुरुषोने विधिमार्ग, अने विधि मार्गे चालनारा पुरुष तेनो योग मळे छे, बीजाने ते योग मलवो घणो दुर्लभ छे, अने मळेलो विधिमार्ग तेने सेवन करनार पुरुषो भाग्यवान् छे; केमके सेवन करवानी इछा थवी ते पण दुर्लभ छे अने ते भाग्यवान्ने थाय छे, अने विधिमार्गने बहुमान आपनाराओ अने ते मार्ग-ने दुषण नहि लगाडनाराओ पण भाग्यवान् गणाय छे. केमके केटलाएक पुरुषो बे अक्षर जणी आत्मज्ञानी-नुं गोल करी पोताने ते मार्गे चालवुं कडु चरियाता जेवुं लागे, तेथी खोटी भ्रमणामां भुलाइ जइ जे पोता-नी आत्मा अने बीजा भद्रक स्वभाववाला भव्यजी-वोने सरल मार्गथी भ्रष्ट करी नांखनारा जगत्मां घणा होय छे. अथवा भवाभिनंदी जीवो अने विषयानंदि जीवो पण तेवीज रीते स्वपरने भूलावी देछे. जे माणस

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

विधिमार्गनी निंदा करे छे ते पोतानी दुष्टता ते वडे प्रगट करे छे, अने उत्सूत्र प्ररुपणनो दोष पोताना माथा उपर वहोरी ले छे. मात्र दृष्टिरागथी ते जीव संसारमां बहु भमे छे, घणा दुःखो सहन करवा पमे छे अने बोधी-बीज पामवुं घणुं तेने मुश्केल थइ जाय छे; माटे भव भयभीरुता गुण धारण करी सुविहित आचार्य महाराज अने जिनागम तेनी आराधना (सेवना) करवी. केमके तेज दिव्यनेत्र छे अने ते न होय तो दुःसमकालमां उत्तममार्ग पामवो घणो दुःष्कर छे.

यतः—कत्थ अम्हारिसा पाणी । दूसमा दोस दूसिया ॥ हा अणाहा कहं हुंता । न हुंतो जइ जिणागमो ॥ १ ॥

भावार्थः—दुसम कालना दोषे करी दूषित थयेला अमारा जेवा प्राणी अनाथो क्यां ! हा इति खेदे जो जिनागम न होततो शी वले थात! एवी उत्तम भावना आगमविधिमार्ग उपर करवी. आगम उपर बहुमान राखनारा अठीमिंझ प्रेमरागे करीने रक्त एवा जे जीवो तेओनोज कल्याण थाय छे.

एवडां मत कीधां जूजुआ, तेहने माथे गुरु कुण हुआ;

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

आप आपणी मत अनुसार, वरते बहुल नवलआचार।१५३
सामाचारी कहे जे नवी, सूत्र अर्थ मारग फेरवी;
हीणाचारी गुरुने कहे, आपमते जइ अलगा रहे ॥१५४॥
इम करतां जो सगुरा होय, तो जगमांहि न निगुरा कोय;
आप आपणे छंदे जे रहे, तेहने कहो सगुरा कुणकहे।१५५
अने सत्य जो हुइ परंपरा, साधु पाटमांहि लाभे खरा;
तेतो गुरु लाभे दोहिला, जो जो जिनमतमांहे नला ।१५६
ते माटे गुरुपरीक्षा करो, जूनो मारग जोइ आचरो;
कुगुरु संग छंडो हलबोल, सद्गुरु संग करो कल्लोल।१५७
केइ कहे गुरुकुल आपणो, न लोपिवें तसु उत्तर सुणो;
कुलगुरु जिनशासन न कहाय, गुणवंतदेखीआदरथाय।१५८

यतः—नो अप्पणा पराया। गुरुणो कइयावि हुंति सद्धाणं ॥ जिण आण रयण मंडण। मंडिय सव्वेवि ते सुगुरु ॥ १ ॥ इति वचनात्.

भावार्थः—आ आपणा गुरु छे, आ बीजाना (परना) गुरु छे, एवी रीत श्रावकनी होय नहि. किंतु जिन आज्ञारूप रतनवडे शोभित होय ते सर्व सुगुरु जाणवा. आ आपणो सागनापाटीयासमान गछ, अने बीजानोतो मत, अने आ आपणा गुरु, बीजातो कुगुरु, वली बीजा

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पंचांगी मानता पण नथी, आ आपणा चैत्य तेमांज द्रव्य आपवुं, बीजाना देरामां न आपवुं, आ आपणा गुरुनेज वांदवा, बीजातो ढींगला ढींगलीसमान तथा होलीना राजा तथा धूलीपर्वसमान जाणवा. पण "पांवकी तलेकी नहीं सूजे आग मूरखकुं, उरसुं कहत तेरे सीरपे बलतुं हे" ए न्याय याद तो करो! सकल पंचांगी अमे मानीये छीये! "शुवा राम राम" माफक बोली लोकोने बहेकावी जरमाववा, वली साधु संविज्ञपद धरनार थतां क्षेत्र, पुर, पाटण तथा देश तथा उपाश्रय, धर्मशाला विगेरेमां ममता पोते करे अने श्रावक पासे करावे के आपणी जग्यामां कोइ त्यागी महंत पुरुष होय तोपण वासो वसवा देवो नहीं, परंतु साधु थतां विचार करवो जोइयेके पोतानां घरबार कुटुंब त्यागकरी वळी मुकामनी ममताकरवी ते करवाथी सर्वपरिग्रहत्यागनामना पांचमा महाव्रतनो जंगथाय. वली अतिगृहस्थपरिचय ते नियम (मर्यादा) थी उपरांत वरते तो प्रथम पहोर तथा छेल्ला प्रहरमां स्वाध्याय पण बनी शके नहीं, वळी स्वेछाचारी गुरुद्रोही थइ, आणा जंग करी पोतानी इछाए साधु साध्वी एकाकी विहार करे ते पण संसार वृद्धिनुं कारण. एक घर छोडी हजारो घरनी फीकर करवी ते साधुनो आचार नथी, माटे बावालोकना

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मठनी पेठे साधुये मठपतिपणुं करी मुकामनी ममता करवी नहीं. त्यागी थइ बीजाने बोध करे के असार संसार छे अने पोते नित्य कजीया करे, अहंकार ममकारथी गरकाव होय, अने गुरुकुलवासथी भ्रष्ट थइ ते अनंतानुंबंधी कषायनुं शरणुं ले छे, माटे संविज्ञ पुरुषोये ग्रहणमेधावी[१], श्रुतमेधावी[२], मर्यादामेधावी[३] थवुं, जेथी पोतानुं कल्याण थाय. वली आ स्थले याद राखवानुं छे के अढार पापस्थाननो त्याग करी कोइ वात जोयाविना, सांजल्याविना करवी ते अभ्याख्यान (कुडो कलंक) आपवा जेटलुं थाय छे, अने एटलुंज नहि पण ते माणसने वगर हथियारे खुन करवा जेटलुं पाप वहोरीलेवा जेवुं थाय छे; माटे तेथी अटकवुं, अने आचारसमाधि[१], श्रुतसमाधि[२], तप समाधि[३], विनयसमाधिनुं[४], अवश्य ज्ञान मेलववानी जरुर छे. वली विषक्रिया, गरलक्रिया तेनाथी दूर रहेवुं, अने महानिशीथसूत्रना तप करवा, योग वहेवा, वहीने ते सूत्र सुगुरु सुविहत पासे तेनो अर्थ जो जाणशो या सांजलशो तो सत्यज्ञानसूर्य तमारा हृदयाचलमां उदय थवाथी मिथ्यात्व अंधकार दूर थशे; माटे खास महानिशीथसूत्रनी आराधना करी जणवानी,

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अर्थथी समजण लेवानी जरुर छे, तोज तमने परंपरागमनुं ज्ञान प्राप्त थशे अने पोताना अने परना आत्मानो उद्धार करशो; माटे गुणवान् पुरुषोनी सेवना करवी तेज कल्याणकारी छे. तेथीज मनोवांछित फलनी सिद्धि थाय छे.

इक कहे अक्षर दिये जेह, गुरु जाणी मानीजे तेह;
तिहांउत्तर सुणजसउपगार, जेटलो ते लेखविएसार ।१५९
एक अक्षरनो दाखि मेल, मूरख मंडे बहु मत जेल;
जोएसूधो जाणविचार, लहेसत्य असत्यकरेपरीहार । १६०
ते गुरु तेणे गुरू बोलाय, पण ते साधु सुगुरु न कहाय;
उपगारी गुरु घणे प्रकार, साधु सुगुरु सूधे आचार ॥१६१
पण जे आरंजी परिग्रही, ते सूधा गुरु कहिये नहीं;
लोहशिलाबोळे जेमनीर, तिमकुगुरुकिमपहुचावेतीर।१६२

यतः—जह लोह शिला अप्पंपि बोलए ।
तहवि लग्गं पुरिसंपि ॥ इहसारं जो अगुरु ।
परमप्पाणंच बोलेइ ॥ १ ॥

भावार्थः—जेम लोढानी शिला पोते डूबे ने बीजा जे वळगेला होय तेने पण डूबाडे; तेम विषय, कषाय, आरंज, परिग्रहवालो गुरु पोताने अने परप्राणीने संसारचक्रमां डूबाडे छे.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

लौकिकग्रंथे जोइ विचार, तेहपण कुगुरु संग परिहार;
कौरव पांडवना संग्राम, साख एहनी छे तिण ठाम॥१६३

यतः—गुरोरप्यवलिप्तस्य । कार्याकार्यमजानतः ॥ उत्पथप्रतिपन्नस्य । परित्यागो विधीयते ॥ १ ॥ त्यजेद्धर्मं दयाहीनं । विद्याहीनं गुरुं त्यजेत् ॥ त्यजेत्क्रोधमुखीं भार्यां । निःस्नेहान् बान्धवान् त्यजेत् ॥ २ ॥

भावार्थः—जे गुरु मदथी छाकटा बनेला होय अने कार्य अकार्यनुं जेने भान नथी, वळी उन्मार्ग (अवळे रस्ते) पोते चाले अने बीजाने पण केवळीए परुपेला धर्मथी भ्रष्ट करावे एहवा कुगुरुनो संग त्याग करवो, कारण के दयारहित जे धर्म होय तेनो त्याग करवो अने विद्याहीन (अविद्यावान्) गुरुनो त्याग करवो, क्रोधमुखी भार्याने त्याग करवी, अने स्नेह वगरना बंधुओने त्याग करवा.

जिनशासन पण जोइ विमास, कुगुरुतणे नवि रहियेपास;
शेलगतज्यो शिष्यपंचसे, ज्ञाताधर्म कथा जुओ रसे॥१६४
घणेसाधेंपणतज्योजमालि, जिणे पाड्यो घणलोक जमालि;
अंगारमर्दक नामे सूरि, सुसाधु शिष्ये कीधो दूरि ॥१६५

वर विषधर सेवीजे साप, कुगुरु सेवतां छे बहु पाप;
जोजो ग्रंथ विचारी करी, राग द्वेषनी मति परिहरी॥१६६

यतः—सप्पे दीठे नासइ । लोउ नहु कोइ किंपि अक्खेइ ॥ जो चयइ कुगुरु सप्पं । हा !! मूढा जणंति तं दुठं ॥ १ ॥ सप्पो इक्कं मरणं । कुगुरु अणंताइं देइं मरणाइं ॥ तो वलि सप्पो गहियो । मा कुगुरु सेवणं नद्द !॥ २ ॥

जावार्थः—सर्पना जयथी माणस ज्यारे दूर नाशी जाय छे त्यारे लोक पण कहे के तें सारु कर्युं, पण जे प्राणी कुगुरुरूप सापने त्याग करे तो मूढ प्राणीयो बोले के तें जुंडु कर्युं, पण ते जाणता नथी के सापतो मात्र एक मरण करे अने कुगुरुतो अनंता मरण करावेछे.

पाले क्रिया न साचूं कहे, ते पण गुरु पदवी नवि लहे;
क्रियाविसासिमराचिसकिमेमणिधरसपर्यानदिइंजिमे१६७

यतः—बहु गुण विज्जा निलउ । उसुत्त जासी तहावि मुत्तव्वो ॥ जहवर मणिवर जुत्तो । विग्घकरो विष हरो लोए ॥ १ ॥

जावार्थः—अनेक विद्यानो जंडार होय, पण जो

उत्सूत्र परूपनार होय तो मणिभूषित एहवो पण साप जेम विघ्नरूप गणाय, तेम ते गुरु पण मोक्षमारगमां विघ्न कारक जाणी छांडवो.

जिम जिम बहुश्रुत बहु परिवार, घणा लोक वंदे अविचार:
जो पणनकहे आगमसार, शासननो ते शत्रु विचार ॥१६०

यतः—जह जह बहुस्सुउ समउय। सीसगण संपरिवुडोअ ॥ अविसार सोय पवयणे। तह तह सिद्धंत पडिणीउ ॥ १ ॥

भावार्थः—जेम जेम बहुश्रुत—घणां शास्त्र जेणे सांभल्यां छे एवो, अथवा जेणे घणां श्रुतनो अभ्यास कर्यो छे एवो, तथा घणा अज्ञानी लोकोने संमत (इष्ट) एवो, वली शिष्यना समूहवडे (घणा साधुना परिवारे) परवरेलो छे, छतां पण जो ते साधुना हृदयमां ते शास्त्र रहस्यनो प्रवेश न थवाथी कोरोने कोरो रह्योतो जेम "चक्रवर्तिनी खीरमां चाटवो (तावितो) पड्यो रहे तोपण खीरनो स्वाद न पामे" तेम वली जेम "नदीमां कठोर पथरो भेदाय नहि, पाणी अंदर पेसी शके नहि" तेम शास्त्र वांचे पण तेनो रहस्य पामी शके नहि, (एटले अनुभव रहित) ते सिद्धांतनो शत्रु जाणवो. मतलब के तत्त्वज्ञाननो अनुभवी थोडु

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जएयो होय पण ज्ञानथी थतो लाज तेणे मेळव्यो ते मोक्षमार्गनो आराधक जाणवो. अने बहुश्रुत छतां तत्त्व ज्ञाननोलाज न मेलव्यो (न पाम्यो) ते विराधकजाणवो.

शरणांगतनुं शिर जे छुणे, ते लेंपाये पातक घणे;
तिमआचारज पण जाणवो,उसूत्रजाषी मन आणवो॥१६०

यतः—जह सरणमुवगयाणं । जीवाणं निकिंतए सिरे जोउ ॥ एवं आयरिउ विहु । उस्सुतं पन्नविंतोअ ॥ १ ॥

जावार्थः—जयजीत प्राणी शरणागत थयो छतां शरणे न राखतां तेज माणसनुं जेम गळुं कापे, तेम देशना देनार उत्सूत्र (सूत्र विरुद्ध) परूपणा करनार आचार्य पण तारवाने बदले बूडावनार अने अनंत जव भ्रमणमां नाखनार जाणवो. कोइपण माणस गफलतथी गुनेहगार थवाथी, या सबल माणसथी पोताना बचाव सारु उत्तम माणसना शरणे जाय छे, ने तेज माणस पोतानुं जान जूली ते शरणागतनुंज माथुं कापी नाखे तो "जेनी वाड तेनी धाड" ए न्याय थाय; तेम कोइक प्राणी संसारदावानलथी बचवा सारु धर्माचार्यनुं नाम सांजली तेनी पासे जइने अरज करे के, हे जगवन्! संसारदावानलथी मने शीतल करो अने

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सन्मार्ग बताडो, त्यारे आचार्ये ते भोळाजीवने सन्मा-र्गना बदले उन्मार्ग बताडी, पोताना वाडामां दाखल करवामाटे लालचमां नाखी देवाधिदेवनो रस्तो न बतावतां सूत्रविरुद्ध परूपणा करे के हुं कहुं छुं तेम कर. एम बतावी सम्यक्त्वना बदले मिथ्यात्वमां नाखी धर्म-रूप मस्तक छेदी नाखे तेवा आचार्यनो संग कदी करवो नहि.

तो गुरुनामे शुं राचीए, साधु सुगुरुना गुण वांचीए;
गुरुलोप्याथी बीहे जेह, साचा साधु न मुके तेह ॥१७०॥
साचे समकित साचे क्रिया, साचे सद्गुरु साचे दया;
साचुं कहे ते साचा सूरि, ते वंदु उगमते सूरि ॥१७१॥
जूना नवा तणी वानगी, ए देखाडी एटला लगी;
वळी जे दीसे मत नवनवा, ते पण सूत्रविरुद्धजाणवा॥१७२
गच्छाचार तणी चौपाइ, गाथा एकसो तिहुंतेर थइ;
ए सांभळी सौधर्मगच्छभजो, आपमतिनीसंगति तजो॥१७३
इम जोइने जिनवर आण, सूत्र अर्थ सवि करो प्रमाण;
अभिनिवेशमननो परिहरो,ब्रह्मकहे जिमशिवसुखवरो॥१७४

॥ इति श्री शास्त्रविशारद जैनाचार्य श्री ब्रह्मर्षि कृत श्री सुधर्मगच्छपरीक्षा संपूर्ण ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

॥ (श्रोता परीक्षानी) सझाय ॥

(राग कालंगडो)

वरसे पुष्करावर्त्त सुमेहा । तब पृथ्वी जेदाये नीर । पण एक मगसेलीउं न जेदाय । अति न्हानो ने कठिन शरीर ॥ १॥ तिम गुरुवचने किमें न जेदाय । जे प्राणी होय जारी कर्म । कंठ (थुंक) शोष जो अति घणो कीजे । तोय न पामे सूधो धर्म ॥ तिम० ॥ २ ॥ बावना-चंदन गंध तजीने । कसमल ऊपर माखी जाय । परिमल कमलतणो ढंमीने । मेमकमो नित कादव खाय ॥ तिम० ॥ ३ ॥ काले कांबल गुलियलि कापरु । चोलतणो नवि बेसे रंग । वायस वान न थाये धोलो । जो नित मोहे यमुना गंग ॥ तिम० ॥ ४ ॥ चिगटे कुंजे जल नवि जेदे । न रहे काणे जाजन नीर । रवि देखी घूवरु हुए अंधो । पान न लहे वसंत करीर ॥ तिम० ॥ ॥ ५ ॥ मूंग कांगडू कण मांहे जेहवो । पाणी अगनि न ढीपे अंस । जव केलव्या न होवे तंडुल । बग सीखव्या न थाये हंस ॥ तिम० ॥ ६ ॥ मृगमद अगर कपूरे वास्यो । लसण न पामे रूमो गंध । सूरज शशिहर दीवाजोतें । किमही नवि देखे जात्यंध ॥ तिम० ॥ ७ ॥ ऊग्यो चंद चोरने न गमे । मेहें जवासो सूकी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

जाय। खीर खांड घृत मीठो जोजन। पेट कूतराने न समाय॥ तिम०॥ ७॥ मीठी द्राख न वायस चाखे। श्वानपुंछडी न समी थाय। आंबानुं वन (करडो) ऊंट चरे नही। अन्याइने न गमे न्याय॥ तिम०॥ ए॥ खाय न संनिपातियो साकर। पापी ने धरमी न सुहाय। रुचे नही चंपो मधुकरने। घुण नित सूको लाकरु खाय॥ तिम०॥१०॥ गाम समीप नदी मूकीने। रासज राखें खरके अंग। कुलवंती कामिनी तजीने। नीच करे पर रमणी संग॥ तिम०॥११॥ नल फीटीने सेलडी न थाये। इक्षु तणे जो वाधे संग। दूध गुलें जो लींब सींचाये। तोहे मीठो नवि थाय प्रसंग॥ तिम०॥ १२॥ खीर सर्प्पमुख न हुवे अमृत। काच कमायो रतन न होय। खारो न टले समुद्रनो नदीयें। मोटे वरु फल नीरसज होय॥ तिम०॥ १३॥ माथे मणि नितु वहे भुजंगम। तोहे ते नवि निरविष हुंत। रामतणी सेवा करे हनुमंत। लंगोटी अधिको न लहंत॥ तिम०॥१४॥

(ढाल—श्री सद्गुरुवचन करे शुं तेहने. ए राग)

इम लौकिक संबंध विचारी। लोकोत्तरनो सुणजो वात। चित्रे ब्रह्मदत्त बहु समजाव्यो। विरतितणी नवि आणी घात॥ श्री सद्गुरुवचन करे शुं तेहने॥१५॥ महावीरनो

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

शिष्य जमाली । तिहनें नवि लागो उपदेश । कालिग-सूरीयो कपिलादासी । गोसालो पामशे कलेस ॥ श्री०॥ ॥ १६ ॥ विष्णुकुमारनां वचन सुणीने । नमुचि न मानी कांई सीख । मारणहार उदाई नृपनो । बार वरस लगि पाली दीख ॥ श्री० ॥ १७॥ शिष्य पांचसें केरो नायक । अंगारमर्दक नामें सूरि । श्रावक परख्यो अजव्य दया-विणु । निर्गुण जाणी कीधो दूरी ॥ श्री० ॥१८॥ संवेगी सावद्याचारज । सूत्र विरुद्ध तिणें कह्यो विचार । नागिल बंधव बहु समजाव्यो । सुमतिए कुगुरु न तज्या लगार ॥ श्री० ॥ १९ ॥ शीलसनाह रिषिये प्रतिबोधी । रूषीये नवि काढ्यो साल । वरस पंचास तवे तप लख्क-णा । तसु फल न थयो एके वाल ॥ श्री० ॥२०॥ ईसरनें मन धर्म न जेठ्यो । रज्जा महासतीने थयो रोग । फासू जलथी काया विणसे । इम जामें घाढ्यां बहु लोग ॥ श्री० ॥ २१ ॥ पालककुमर नेमि जइ वंद्या । कंडरीक पाल्यो चारित्र । कृष्ण साथें वीरे जइ वंद्या । फलें फेर अति थयो विचित्र ॥ श्री० ॥ २२ ॥ संगति एहने हुंति रूडी । पुण नवि प्रीछ्यो सार विचार । कर्म निकाचित जेहने पोते । ते प्रतिबोध न लहे लगार ॥ श्री० ॥२३॥ दृष्टिरागें नर जे हुए रातो । जे हुइ दोषी अति घण-

घोर । मूढ वचन परमारथ न लहे । विग्रह पक्रिया वदे कठोर ॥ श्री० ॥ २४ ॥ ए चिहुंने धर्म कहेवा बेसे । ते नवि जाणे आगम रीत । कूकरवदनें कपूरज घाले । जे उहपणाने न धरे चित्त ॥ श्री० ॥ २५ ॥ लोह वणिग जिम करे कदाग्रह । सूत्र न साचो प्रीछे जेह । लोक प्रवाहे मूंरू मेल्हावे । साचो धर्म न जाणे तेह ॥ श्री० ॥ २६ ॥ नारी कर्म घणाने ए परें । हलूकर्म प्रीछे तत-काल । सनतकुमार चिलातीनंदन । थावच्चासुत गय-सुकमाल ॥ श्री० ॥ २७ ॥ पर्षद पुरुष जोइने कहिवो । धर्म कह्यो इम आचारंग । नंदीसूत्रें सीष संजारी । ब्रह्म कहे ज्यो ज्यो मनरंग ॥ श्री० ॥ २८ ॥

॥ अथ श्री गीतार्थावबोध–कुलकम् ॥

॥ देशी–सलोकानी. ॥

॥ नेमजी केरो कहुं सलोको, एक चित्तेथी सांजळजो लोको. ॥
अथवा चउपाइ छंद.

वीर जीणंदह दुप्पसहंतर, निरतो वरते धर्म्म निरंतर।
तेहतणो विछेद पयंपे, आगम वयणथकी नविकंपे ॥१॥
पंचमकाले पड्या प्रवाहे, केइ कुगुरु जण जणने वाहे ।
वाध्या क्रोध लोजकल्लोल, अविधिजेलि कीधो हलबोलार

श्रावकपमुह परिग्गह ममता, मंडी बहु दीसे गुण गमता।
गुणविणुजुजबलगुरुजिमरहिये,अविधिमूलपहेलोएकहीये.
तिणि नविलाजेसूधो धर्म, काचरतनमिलियाजिमजर्म।
पारख जिम परखीने लीजे, धम्मतणो पण छेदन कीजे॥४
किणे कुसंगे कनकमल लागो, पीतलने मूले कांइ मागो।
छइल जेम तट जल पिय छंडे, जेंता डोहे डहल म मंडे॥५
जे अजाण तसु संग न कीजे, गड्डरि पुंछे केम तरीजे।
अंध अजाणपंथकिमदाखे, तिमसुगुरुविण धम्मकुणजाखे
अबूह वइद तूजे खंधार, लोकमांहि पण इसो विचार।
रोग अजाणये उखध कहे, रूषिहत्याफल ते नर लहे॥७॥
इसो जाणि परखी ब्योजाण, धम्मतणो जिमलहो प्रमाण
शब्द जेद जाणे जे अर्थ, ते गीतारथपदे समर्थ॥७॥
आगम बोल्यो शब्दविचार, दसम अंगे जाणो सविचार।
तसु विशेष अनुयोगदुवार, जाणीलेजोआगम सुविचार॥९
नाम पमुहपद जाणे पनर, कूम सत्यपद लहे पटंतर।
कूमो अर्थ कहे जाणंतो, अजिनिवेसि जव जमे अणंतो॥१०
एह जेदनिरतानविजाणे, ते अजाण किम अर्थ वखाणे।
दृष्टिराग उपजे प्रतीत, धम्मतणी जजना तसु चीत॥११
नेमीविणु परधन व्यवहार, परप्रतीति तिम धर्मविचार।
आपणजाणपणो इणकारण, चरणमूल समरथ जवतारण

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

क्रियावंत पाळे गीतारथ, अधिको भवियणतारणसमरथ।
वीर प्रकास्यो पंचम अंगे, जोइलेज्यो छे चउभंगे ॥१३॥
करे क्रिया सत्य नवि जाणे, आपण छंदे सूत्र वखाणे।
देसथकी आराधक कहिये, तासु संगे धर्म्मभजना लहियें
जाणे सत्य कहे जे साचो, क्रियातणी आचरणा काचो।
तेहने देसविराधक जाणो, तासुसंग गुणहाणि म जाणो १५
एक अजाण क्रियानहुपाळे, साधुवेस जिनधर्म्म विटाळे।
लोह थान बूडंतो बोले, सर्वविराधक मुनिने तोले॥१६॥
संवेगी गीतारथ साचो, तसुदंसण गुरु जाणी राचो।
आपण तरे अनेराने तारे, सर्वाराधक वीर विचारे ॥१७॥
ज्ञानहीन किरिया आडंबर, मंडी मूढ मुसें सेयंबर।
अरे मूढ ते किरिया न होय, विणु मूले तरूडाल मजोय
नाणावरण न सम्योनखीण, जाइसरण सुयनाणिविहीण।
इमअदत्त श्रुतव्रत जे लीजे, इणि चोरी कांइ काज नसीजे
पुस्तक वांची अर्थ विमासे, आपण छंदे मन उल्हासे।
गृहीथका गुरुना अधिकारि, कहो कवणपरि ए विचारि।२०
जेसुबुद्धि नृपने बलदीधो, चपलजाणिलेणे मन दृढ कीधो
तिण कारण जाणो अवदाय, श्रमणोपासक बोढयो राय॥
आगम नवसें अंसी वरसे, वीर पछी लखीया मनहर्षे।
गणि दिवढ्डिये तेण पयट्टे, अपवादे उस्सग्ग न वट्टे ॥२२
आगमजाणिवानी परिकेही, पुस्तकविणु जणतां किम गेही

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मुनिसमीपे गृहवासेवसता, अवधे नहु जाएयाश्रुतजणतां॥
उद्देशादिक क्रिया विशेष, वायण तयणंतर सविसेष।
कालग्रहण पूजक ए कीजे, इम आगम अनुजोग लहीजे॥
जो इणेविधि आगम जणिये, तो निश्चे मुनि जणतागणिये।
श्रुत आराधी पहोंचे पार, चोथे अंगे छे श्रुत अधिकार २५
जिहने जे आव्यो अधिकार, ते जजतो नहु लहे धिक्कार।
इम छंनी उपरांठा चाले, साल जेम चिरकाल ते साले॥२६
पीपली बांधी कांइ तुम्हे ताणो, ज्यांसेवक त्यां राय म जाणो
साधुसमीपे संजलि श्रुत अर्थ, श्रावक बोहया तरण समर्थ॥
असुण्यो अदीठो अजाण्यो, जणजणसाखे अर्थवखाण्यो।
ते नर हुस्ये बहुल संसारी, पंचमअंगे लेहु विचारी॥
जे आगम जयवंता संपइ, तासु जाव संजलि मन कंपइ।
अविधिजणी कूडो जेजाखे, बिहुंमांहि जव एक नराखे।२९
जे निय छंद पडे नहु पासे, वसे सुगुरु गीतारथ पासे।
पंचमहव्वयनिरता पाले, ज्ञानतणी आशातन टाले॥३०
सुगुरु संग संजलि संवेगी, विधिशुं श्रुत जणीछे अनुयोगी
गीतारथ पदवी आराधे, निश्चे ते परमप्पह साधे॥३१॥

कलश–इम आगमवाणी जवियण जाणी, संवेगी गीयथ्थ पहं। सूत्रारथ साचो संजलि राचो, जिणधर्मे जेम लहो सुहं॥ ३२॥

॥ इति गीतार्थ पदावबोध कुलकम्॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

॥ अथ श्रीविजयदेवसूरिकृत सज्झाय ॥

॥ आरती सब दूरे करीए ॥ ए देशी ॥

वीर जिनेश्वर पय नमी, कहिस्युं सूत्राचार; एक मने जे करतां सही, जाइ लहियें हो जवसागर पार ॥ १ ॥ सूत्र तहत्त करी सद्दहो ॥ मत राचो हो गाडरीए प्रवाह; कुमति कदाग्रह छंडजो, आलोचो हो निज हीयडामांह ॥ सूत्र० ॥ २ ॥ सूत्र विरुद्ध जे दाखियो, पासथ्थानी रीति। ते सांजळीने टाळजो, जिनशासने हो छे जेहने प्रीति ॥ सूत्र० ॥ ३ ॥ शीलवती राजीमती, सकल महाव्रतधार; साधु न वंदे तेहने, आराधे हो कांइ अव्रति नार ॥ सूत्र० ॥ ४ ॥ पडिकमणामांहि किम करे, साधु देवी आधार; डाह्या कांइ डोलो तुमे, एतो पडिघो हो गच्छाचार ॥ सूत्र० ॥५॥ यक्ष देवीनी थुइ कही, अवग्रह मागे जोय, तिणें उपाश्रयें जे रहे, जिनशासनी हो साधु न होय ॥ सूत्र० ॥ ६ ॥ देवीनो काउसग्ग करे, मन चिंते नवकार; अन्य निमंत्री अपरने, जीमाडे हो ए कवण आचार ॥ सूत्र० ॥ ७ ॥ इह लोकारथि काउसग्ग, जाजे जिनवर आण, सूयागमे सुखदायिनी, कांइ उलिया हो खेत्र देवी सुजाण ॥ सूत्र० ॥ ८ ॥ पडिक्कमणे आलोइये, जे कांइ कर्यो मिथ्यात; जो तिहां

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

तेहिज मांढीये, तो जेलीए हो वच्छनाग न वात ॥सूत्र०॥ ॥ए॥जिनवरना श्रावक थया, आणंदादिक जेय; ए नमोर्हत सिद्धा विना, किम करतां हो आवश्यक तेय॥सूत्र० ॥ १० ॥ नमोर्हतसिद्ध जीणे कर्यो, ए उत्सूत्र अपार; गच्छ बाहिर ते काढियो, कांइ लागो हो तुमे तेहनी लार ॥ सूत्र० ॥११॥ सूत्र विरुद्ध परंपरा, पासछानी जाण, दुष्ट क्रिया ते छांडतां, मत आणो हो मनमांहि काण ॥ सूत्र० ॥ १२ ॥ जो पासछा मानीये, कांइ छांडी धनवात; जो परिग्रह छंडेवो कह्यो, तो करीवो किहां कह्यो मिथ्यात ॥ सूत्र० ॥ १३ ॥ चैत्यवंदन मुखे उच्चरे, वंदे यक्ष अनाण; घणुं किश्युं कहिये इहां, हवे चेतो हो चतुरसुजाण ॥ सूत्र० ॥ १४ ॥ चउमासुं पुनिम दिने, जगवइ अंग विचार; पाखी चउदिसि दिन कही, ते न करे हो किम तरे संसार ॥ सूत्र० ॥ १५ ॥ पंचमि पर्व संवत्सरी, बोल्यो श्री जगनाहि; तेह विराधे मठपती, ए रुलसे हो जवसागरमांहि ॥ सूत्र० ॥ १६ ॥ पासछानी परंपरा, जो मानीसे आज; तो पंचमहाव्रत जांजवा, पणि कारण हो किम सरस्ये काज ॥ सूत्र० ॥ ॥ १७ ॥ बोल विरुद्ध घणा इस्या, नही कहणनो जोग; तिलमांहि काला केटला, ते जोसें हो जे पंडित लोग

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

॥ सूत्र० ॥ १८ ॥ खोटे मूत्रमे मतपती, लोक मुसे निसदीत; ते हित कारण में कह्यो, मत आणो हो कोइ मनमें रीस ॥ सूत्र० ॥ १९ ॥ गछाचार अनेक छे, ते जाणे सहु कोइ; श्री जिन सूत्र आराधज्यो, जीम तुमने हो अविचल सुख होइ ॥ सूत्र० ॥ २० ॥ श्री विजय देवसूरी इम कहे, पालो आगम प्रमाण; सूत्र विरुद्ध बांडज्यो, जीम पामो हो शिवपुर ठाण ॥ सूत्र० ॥ २१ ॥

इति सातिशय शक्तिधारक श्रीमद्विजय-
देवसूरीणा विरचिता स्वाध्यायैक-
विंशतिका ॥ श्रेयसे जवतु ॥

॥ दृष्टिराग कदाग्रह परिहार हितशिक्षा ॥

॥ राग प्रजाती ॥

दृष्टिरागे नवि लागीये, वली जागीये चित्ते ॥
मागीए शीख ज्ञानीतणी, इठ जांगीये नित्ये ॥ १ ॥
जे ठता दोष देखे नहि, जिहां जिहां अति रागी ॥
दोष अठता पण दाखवे, जिहांथी रुचि जागी ॥ २ ॥
दृष्टिरागे चले चित्तथी, फरे नेत्र विकराले ॥
पूर्व उपकार न सांजरे, परे अधिक जंजाले ॥ ३ ॥
वीरजीन जब हुता विचरता, तब मंखली पुत्तो ॥

जिन करी जगजने आदर्यो, इहां मोह अति धूत्तो॥४॥
रुद्धि जंडार रमणी तजी, जजी आप मति रागो ॥
दृष्टिरागे जमाली लह्यो, नवी जवजल तागो ॥ ५ ॥
वली आचार्य सावद्य जे, हुउं अनंत संसारो॥
दृष्टिरागे समती पण थयो, महा निशीथ विचारो ॥६॥
हुए जिनधर्म आशातना, अजाणयुं कहे रंगे ॥
मंडु आगळे जिनवरे, वदीत जगवइ अंगे ॥ ७ ॥
गामना नटने मूर्खनो, मिल्यो जेहवो जोगो ॥
दृष्टिराग मिल्यो तेहवो, कथक सेवक लोगो ॥ ८ ॥
आपण गोठमी मीठमी, हठीने मन लागे ॥
ज्ञानी गुरु वचन रलीयामणां, कटुक तीरसां वागे॥९॥
दृष्टिरागे भ्रम उपजे, ज्ञान वधे गुणरागे ॥
एहमां एक तुमे आदरो, जलो होय जे आगे ॥१०॥
दृष्टिरागी कदा मत हुवो, सदा सुगुरु अनुसरजो ॥
वाचक जशविजय कहे, हित शिख मन धरजो ॥११॥

॥ अथ कुगुरुनो स्वाध्याय ॥

॥ ढेडो नाजी ॥ ए देशी ॥

शुद्ध संवेगी किरिया धारी, पण कुटिलाइ न मूके ॥
बाह्य प्रकारे किरिया पाले, अभ्यंतरथी चूके ॥ १ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

कपटी कहिया एह जिणंदे, दुष्टनुं नाम न लीजे ॥ ए आंकणी ॥ पीलां कपडां खंजे धाबली, काख देखाडी बोले ॥ तरुणी सुंदर देखी विशेषे, पुस्तक वांचवा खोले ॥ क० ॥ २ ॥ पेंडा देखी काढे पडघो, पडघा मान करावे ॥ खाजां वहोरे खांत करीने, पूरीने वोलि रावे ॥ क० ॥ ३ ॥ ज्ञान मिषें उपदेश दइने, सूक्ष्म परिग्रह राखे ॥ ए कपटीनुं नाम न लीजे, इम उत्सूत्र जे जांखे ॥ क० ॥ ४ ॥ ताल कूटवा सार्थे हींडे, श्राविका ले दश बार ॥ यात्राने मिष एणी परें विचरे, दूर रह्या आचार ॥ क० ॥ ५ ॥ पाशेर घीथी करे पारणुं, वली खावे अधशेर ॥ तोही ताल्ला इणिपरें बोले, उपवासे आवे फेर ॥ क० ॥ ६ ॥ बगलानी परें पगलां मांडे, आडुं डोडुं जोवे ॥ महिला सार्थे बोले मीठुं, साधुवेष वगोवे ॥ क० ॥ ७ ॥ आचारांगे वस्त्रनो जांख्यो, श्वेतने मानो पेतें ॥ तेतो मारग दूरें मूक्यो, कपडां रंगां हेतें ॥ क० ॥ ८ ॥ बाजीगर जेम बाजी खेले, धीवरे मांडी जाल ॥ ते संवेगी सूधामत जाणो, ए सहु आल जंजाल ॥ क० ॥ ए ॥ उंचुं घर अगोचर होवे, मासकल्प तिहां कीजे ॥ सुख सातायें पडिलेहण चाले, साधु जन्म फल लीजें ॥ क० ॥ १० ॥ रात जगावे महिला

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मलीने, गावे गीत रसाल ॥ चार कथानां कर्मज बांधे, मनमां थइ उजमाल ॥ क० ॥ ११ ॥ मध्यान्हें महिला-ने तेडे, हसीने पूछे वात ॥ अढारमो उपधान वहोतो, अम तुम मलशे धात ॥ क० ॥ १२ ॥ तव ते कामिनी हसीने बोले, साचुं कहो छो स्वाम ॥ गछवासी गुरु आवीने चढशे, तव तुम जाशे माम ॥ क० ॥ १३ ॥ नीचुं जोइने इणि परें जांखे, जणवानो खप कीजे ॥ नानी वय छे हजीय तुमारी, एक एक गाथा लीजे ॥ क० ॥ १४ ॥ घोटकनी परें पंथें चाले, शहेरमां नीचूं जोवे ॥ गरुवरु गाडांनी परें चाले, जिनशासनने वगोवे ॥ क० ॥ १५ ॥ रुमाल पाठां रुडां वेचे, जूनां हाथमां झाले ॥ तृष्णा तोये किमहि न मूके, वली जाणे कोइ आले ॥ क० ॥ १६ ॥ छकाय जीवनो दाह करावे, गाम गाम पाप बंधावे ॥ आंबिल तपनुं ओठुं लइने, कांइ अमने वहोरावे ॥ क० ॥ १७ ॥ कदाग्रहमां पहेला व्रतनो, एहने लागे दोष ॥ मृषावाद तो पग पग बोले, तेहनो न करे शोष ॥ क० ॥ १८ ॥ अदत्त वस्तु अजाण थइने, साधारण सीरावे ॥ चोथा व्रतनी वात छे मोटी, तेहमां काम जगावे ॥ क० ॥ १९ ॥ विधवा पासे विह्वल थइने, काम कुसंगी मागे ॥ वायसनी परें मैथुन सेवे,

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

चोथा व्रतने भांगे ॥ क० ॥ १० ॥ मैथुन सेवे परिग्रह माहे, प्रौढा पातक बांधे ॥ रातजनी परे लोढ्या हींडे, घली उघाडे खांधे ॥ क० ॥ ११ ॥ छठ अठ्ठमादिने अठाइ, नाम धरावे तपसी ॥ महिमा कारण रात्रे खावे, प्रगटे तव होय हांसी ॥ क० ॥ १२ ॥ नगर पिंडो लीया थइने विरलज, पासथ्था थइ बेसे ॥ चोराशी गछ वहोरी खावे, महोटा धरमां पेसे ॥ क० ॥ १३ ॥ मुखे मुहपती राखी बोले, आंख करे छे चाला ॥ मांहो मांहे साने समजे, आंखे करे छे टाला ॥ क० ॥ १४ ॥ ए कपटी नो संग निवारो, जेणे ए जेख वगोयो ॥ जेख उथापी महा ए भुंडो, मनुष्य जन्म फल खोयो ॥ क० ॥ १५ ॥ आदि थकी अरिहंत आचारज, उपाध्याय ने साधु ॥ धोले जेखे सहु एम बोले, वारुने आराधुं ॥ क० ॥ १६ ॥ मूल पंथ मिथ्यात्वे चाले, समजतो नहीं लेश ॥ जिन मतनो मारग छोडीने, कलहो करे विशेष ॥ क० ॥ १७ ॥ आपमतीनो संग तजीने, साधु वचने रहिये ॥ वाणी वाचकजस एम बोले, जिनाज्ञा शिर वहिये ॥ क० ॥ १८ ॥

॥ अथ श्री साधुगुण सझाय ॥

॥ विनय करीजेरे जविषण जावसुं.—ए देशी ॥

॥ पांचे इंद्रीरे अहनिस वस करे, पाले नवविधि

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सीलोजी, च्यार कषाय न सेवे संयती, लक्षण सहुये सलीलोजी ॥ १ ॥ कहिये मिलस्येरे मुनिवर एहवा, जसु मुख पंकज पेखोजी ॥ तनु रोमंचीरे हियमो उ-लसे, विलसे नयण विशेखोजी ॥ क० २ ॥ पंचमहा-व्रत पूरा जे धरे, पाले पंच आचारोजी ॥ सुमती गु-पतिनीरे बहुली खप करे, गुण छत्तीसे जंमारोजी ॥ क० ३ ॥ माश शियालेजी बहुलो सी परे, वाय वाय सीतल वायोजी ॥ तपकर पोहेजी सुजमत सेजमी, संयम सरिखो जावोजी ॥ क० ४ ॥ ग्रीषम कालेजी तरुणो रवि तपे, जीव सवि वंछे छांहोजी ॥ सूरज सांमीजी से आतापना, उंची कर बे बांहोजी ॥ क० ५ ॥ वरषाकालेजी मेलां कापमा, जिरमिर वरसे निरोजी ॥ मांस मसादिक परिसह अति घणा, सहे ते साधु सधीरोजी ॥ क० ६ ॥ समकित मानसरोवर झिलतां, चारित्र वनखंम वासोजी ॥ तप जप संजम स्वामि निरमला, पाले पाले मनने उल्लासोजी ॥ क० ७ ॥ बाविस परिसहारे विषमा जे सहे, महीयल करे विहा-रोजी ॥ खिमाखमग लेइ मुनिवर कर धरे, उपसम रस जंमारोजी ॥ क० ८ ॥ मधुकरनी परें मुनिवर गोचरी, विहरे विहरे सुजतो आहारोजी ॥ ते पण निरस नें वली, थोमखो दीयें दीयें देह आधारोजी ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

क० ए ॥ तीन प्रदक्षिणा देइ वांदस्युं, हियके आनंद पूरोजी ॥ श्रवणे सुणस्युंजी वाणी तसु तणी, चतुर करम दल चूरोजी ॥ क० १० ॥ करजोडीने वीनवस्युं वली, स्वामी सरणे राखोजी ॥ हियके साखेरे पापजिके किया, आलोयसुं तुम साखोजी ॥ क० ११ ॥ तप पच्चिवजस्युंजी निरतो निरमलो, डुरित करस्युं दूरोजी ॥ मनह मनोरथ सहुये पूरस्युं, इम जणे श्री विजय-देव सूरोजी ॥ क० १२ ॥

॥ अथ मुनिगुण सद्याय ॥

॥ नेखरे उतारो राजा जरथरी.—ए राग ॥

पंचमहाव्रत जे धरे ॥ टाले पाप अढारोरे ॥ विविध परिसह जे सहे ॥ नव कल्प करे विहारोरे ॥ एहवा मुनिवर वंदिये ॥ जिम लहिये जवनो पारोरे ॥ केसी गुरु परदेशी जिम ॥ जव पकतां दिये आधारोरे ॥ आंकणी ॥ एहवा० ॥ १ ॥ बारे जेदे तप तपे ॥ पाले पंचाचारोरे ॥ निंदक पूजक सम गिणे ॥ जोस न कहे लिगारोरे ॥ एहवा० ॥ २ ॥ कोइ छेदे वांसले ॥ चंदन कोइ लगावेरे ॥ विहुपर समता मन धरे, जावना बारे जावेरे ॥ एहवा० ३ ॥ चालीस विहु करी आगला, दोष तजि ले आहारोरे ॥ संविजाग मुनिने करे ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

सुमति गुपति नित धारेरे ॥ एहवा० ४ ॥ करम बंध जेहथी हुवे, न करे तिसो विवादरे ॥ नवविधि सीले नितु रमे, ए पुरो विधी वादरे ॥ एहवा० ५ ॥ अंग अगियार जे जणे, पुरव चउद विचारेरे ॥ संयमना गुण साधतां, चत्रियण पार उतारेरे ॥ एहवा० ६ ॥ इम अध्ययन पनरमे, साधु तणा गुण दीसेरे ॥ चरणकमल नितु तेहने, श्री ब्रह्मो भमे सुजगीसरे ॥ एहवा० ७ ॥ इति भिक्षु अध्ययन स्वाध्यायः ॥

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् ॥

श्रीसिद्धार्थनरेन्द्रविश्रुतकुलव्योमैकवृत्तोदयः
सद्बोधांशुनिरस्तदुस्तरमहामाहोन्धकारस्थितिः ॥
ह्रस्ताशेषकुवादिकौशिककुलभीतिप्रणोदक्षमो
जीयादस्खलितप्रतापतरणिःश्रीवर्धमानोजिनः ॥१॥

॥ समाप्तोयंग्रन्थः ॥ श्रेयसेभूयात् ॥

ॐ शान्तिः ॥ ३ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

આ ગ્રન્થ પ્રથમ ખરોદનારનાં મુબારક નામો નિચે મુજબ.

આ ગ્રન્થ (જ્ઞાન) ની આશાતના ન થાય તેમ યત્નાપૂર્વક સંભાળી રાખવો અને અર્થથી ઇતિ સુધી વાંચવું, વિચારવું, મનન કરવું, શુદ્ધ સદ્દહણાપૂર્વક વર્તવું, શંકા ગુરૂગમથી ભાગવા ખપ કરવો, અને સુધર્મસ્વામીની આજ્ઞાનુસારે જ્ઞાન મેળવી શુદ્ધ ક્રિયામાં વર્તવાથી આત્મસુખની પ્રાપ્તિ થશે.

કચ્છ દેશ.

૧૦૧	શેઠજી તોરેયા જારમલ.	ભીંડા.
૨૦૧	મરહુમ શેઠ. તોરેયા મુરજીનાં ધર્મપત્ની બાઇ. પાનબાઇએ પોતાના પતિની યાદગીરી માટે.	,,
૧૦૧	શેઠ. ડાકરસી વેલા વીધાએ પોતાની માતુશ્રીના પુણ્યાર્થે.	,,
૧૦૧	શા. મોણસી રતુના ધર્મપત્નીએ પોતાના પતિના પુણ્યાર્થે.	,,
૧૦૧	શેઠ. લાલજી નરસીના માતુશ્રી બાઇ રતનબાઇ.	,,
૧૦૧	એક બાઇએ જ્ઞાનોદ્ધાર માટે.	,,
૨૫	શેઠ. વેરસી વીરપાર.	,,
૧૦૧	બાઇ. જેતબાઇ.	નાની આખડ.
૨૫	બાઇ. ગોમીબાઇ	,,
૨૫	શા. લધાભાઇ ગુણપત.	,,
૨૦૧	બાઇ. લધુબાઇ.	,,
૫૦	શા. વેલજી તેજુ.	નાંગલપુર.
૨૦૦	શેઠ. મુરજી હેમાભાઇ.	નવાવાસ.
૧૦૦	શા. પચાણ લખુ.	મોટી લાયજા.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

મરૂધર દેશ (મારવાડ).

૧૦૦	શેઠજી બહાદુરમલજી હજારીમલ હીરાલાલ રામપુરીઆ.	બીકાનેર.
૧૦૦	શેઠ. ભૈરવદાનજી રાખેચા.	,,
૧૦૦	શેઠ. હજારીમલજી હીરાલાલ.	કલકત્તા.
૧૦૦	શેઠ. જૈવતમલજી રામપુરીઆ.	,,
૧૦૦	શેઠ. ઉદયચંદજી રામપુરીઆ.	,,

ગુજરાત દેશ.

૫૧	શેઠ. બેચરદાસ કસ્તુરચંદ.	અમદાવાદ.
૧૧૫	શા. જેઠાભાઈ ખેમચંદ.	,,
૨૬	શા. જગજીવનદાસ મુળચંદ.	ઉનાવા.
૨૬	શા. વસ્તારામ ગણેશ.	,,
૨૫	શા. મોહનભાઇ જીવરાજ.	માંડળ.
૨૫	શા. ચુનીલાલ ભલુકચંદ.	,,
૫૧	શા. રવચંદ મંગળજીભાઇ તરફથી.	પાલણપુર.
૫૧	શેઠ. દીપચંદભાઈ કુલચંદ.	ખંભાત.
૫૧	શા. છગનલાલ નથુભાઈ.	મહીજ.
૨૫	શા. કેશવલાલ રતનચંદ.	દેવા.

વિનંતી સાથે લખવાનું કે આ ગ્રન્થની પચીસ નકલની અંદર ખરીદનાર સદ્‌ગૃહસ્થોનાં સુબારક નામ જગ્યા સંકોચથી દાખલ કરી શકાયાં નથી. પરંતુ જે સદ્‌ગૃહસ્થોએ નકલો ખરીદ કરી આ ગ્રન્થને ઉત્તેજન આપ્યું છે તેમનો ઉપકાર માનવામાં આવે છે.

લી૦ પ્રકાશક.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् ॥

नित्यानन्द पद प्रयाण सरणी श्रेयोवनी सारणी
संसारार्णव तारणैक तरणी विश्वर्द्धि विस्तारिणी ॥
पुण्यांकूरभर प्ररोह धरणी व्यामोह संहारिणी
प्रीत्यैकस्य न तेऽखिलार्त्तिहरणी मूर्तिमनोहारिणी ॥१॥

॥ श्री जिनभावपूजाभक्ति परमार्थ स्वाध्याय ॥

॥ राग रामगिरि ॥

श्री जिन जीव सहुनी वेदन, आपण समवड तोले ॥
हृदय नयण जन जोवो जुगते, ते हिंसा केम बोले ॥
कुगुरुतणे उपदेशे भूला, भोला भक्ति न जाणे ॥
पापी प्रतिमा अरिहंतभावे, अरिहंतनी मति नाणे ॥
॥ कुगुरु० ॥ १ ॥

साधु भक्ति गृहवासी सरीखी, ए असमंजस दीसे ॥
बानी भेद्भि भयो भ्रम भारि, जाणुं विश्वाविसे ॥
॥ कुगुरु० ॥ २ ॥

प्रथम तीर्थंकर संजम लीधे, भूमंडल विहरंता ॥
विणु श्रेयांस अवर जन केरी, न हुइ भक्ति करंता ॥
॥ कुगुरु० ॥ ३ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

षट्काय मर्दी मुनि कारणे, प्रवचने जक्ति निवारी ॥
मुनिनायक जिनपतिनो इणिपरे, कही कीणे जगति सकारी ॥ कुगुरु० ॥ ४ ॥

॥ स्वाध्यायार्थलेशो यथा ॥ तत्र प्रथम गाथा जक्तानार्था ॥ परमिदं रहस्यं ॥ ये केचनाल्पमतयः पंडितंमन्याः श्रीजिनप्रणीतनिरवद्योपदेश रहस्यमजानाना वयं यतय इतिख्यापयंतः, इत्थं वदंति ते, आप्त प्रतिकृतिजक्तिं वयं कुर्म्मः, ततो यथावद्जक्तिमजानतां जाषासमिति-शून्यानां मतखंडनाय विधिमार्गस्थापनाय यथावज्जिनजक्तिप्रकटनाय च, अयं प्रयासः ॥ तत्र पूर्वार्द्धेन जगवतः सदयत्वं कथयित्वा चतुर्थपदे-उपदेशनिश्चयःप्ररूपितोयथा ॥

ते हिंसाकिम-एतावता ए जावार्थः-जगवंतनो विधिवादोपदेशनिरवद्य-हिंसा लेश रहित "कुगुरु तणे उपदेशे जूल्या, जोला जक्ति न जाणे ॥ थापी प्रतिमा अरिहंतजावे, अरिहंतनी मति नाणे" एनो जावार्थ लखीये ढीये.

साधु चारित्रियो जगवंतनी प्रतिमाने निश्चय नय

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मने चितन विषे अरिहंत जाणे, व्यवहारे जिन चैत्य प्रतिमा जाणे (ध्यावे)

यत:–" निश्चे विचारि अरिहंत एह–व्यवहार चेइ गुण रत्न रेह "

एवो भावतो साधु,–जे भगवंते दीक्षा लीधी साधु मार्ग आदर्यो, एवुं जाणी नमे छे. जे कारणे साधु भाव स्तवनो अधिकारी, ते भावस्तवनो अधिकारी साधु भगवंतनी द्रव्यपूजा करतो, अरिहंतनी भक्तिनो जाण केम कहीए ? ॥ १ ॥

बीजी गाथाए साधुथको कोइ गृहस्थना सरखी पूजा करे, तो ए असमंजस दीसे छे, गृहस्थ पण त्रीजी निसीहि कीधा पछी द्रव्यपूजा करता नथी दीसता अवस्था विशेषे, अने साधुथका हुंता द्रव्यस्तव करे ए विपरीतपणुं ॥ २ ॥

त्रीजी गाथाए अवस्थाज देखाडे छे ॥ यथा जेवारे श्री आदिनाथनो जन्म हुओ तेवारे चोसठ इंद्रे स्नात्र महोत्सव कीधो तेमज राज्याभिषेक पण कीधो. परं भगवंते दीक्षा लीधी अनंतर घणे मनुष्ये कन्यारत्न राज्यादिकनी निमंत्रणा कीधी, ते तेनी कीधी पण भक्ति, परं भक्ति कहेवाणी नहीं. श्रेयांसकुमारे शुद्ध

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मान इक्षुरस दीधो ते जगवंते लीधो, एतावता गृहस्था वस्था अने चारित्रावस्थानो एटलो अंतर जाणजो ॥३॥

हवे चोथी गाथाए पूर्वोक्त थोते ठे—ठकाय आरंजी साधुनी जक्ति करवी सिद्धांतने विषे निवारी, निषेधी, साधु पण आधाकर्म जाणी न सेवे तो तीर्थंकरदेवने चारित्रावस्थाये शुं कहेवुं ॥ ४ ॥

विजयसुरे सूरियाजे पूज्या, जिणे रूपे जिन जाणी ॥
तिणे रूपे हमणां नहु दीसे, बोले प्रवचन वाणी ॥
॥ कुगुरु० ॥ ५ ॥

सुर अजिगमन जोगे समोसरणे, कुसुमपगर सुरेजरिया।
नरवरे नगर महोछव बहुला, जिनवर काजें-न-करिया॥
॥ कुगुरु० ॥ ६ ॥

श्रावक साधु तणे अधिकारे, जिनवर संयमधारी ॥
व्यवहारे वंदेवा युगतो, लेजो चतुर विचारी ॥
॥ कुगुरु० ॥ ७ ॥

गामेगामे नरने अधिकारे, अजिगम पंच वखाण्यां ॥
तेह विना जे अरिहंत वांदे, तेणे अरिहंत न जाण्या ॥
॥ कुगुरु० ॥ ८ ॥

अर्थ—पांचमी गाथाये विजयदेवताये तथा सूरियाजे जे रूपे जगन्नाथ जाणी अनेक प्रकारे प्रतिमानी

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

पूजा कीधी, त्यां जेणेरूपे कहेतां द्रव्य अरिहंतरूपे जाणी पूजी ॥ एतावता अवस्था विशेष विचारी तेवी पूजा कीधी, तेणेरूपे हमणां नथी, एतावता हमणां जे महाव्रतधारी साधु तेने वर्त्तमानकाले तेणे रूपे कहेतां द्रव्यारिहंतरूपे नथी ॥ एतावता साधुने व्यवहारे दीक्षावस्था वंदनीय जाणीये छीये. दीक्षावस्थाये द्रव्य पूजानी विधि नथी दीसती जे कारणे नमुथ्थुणंनो अधिकारी जेवारे गृहस्थ हुओ त्रीजी निसीही कीधा पछी, तेवारे ते गृहस्थपण द्रव्य पूजा न करे तो यतिनुं शुं कहेवुं ? ॥ ५ ॥

अहीं कोइ चालना करेजे जगवंतने समवसरणे देवताये फूलना पगर जर्या, तथा राजाये नगर समराव्या, ए जगवंतनी द्रव्यपूजा जावावस्थाये दीसे छे. ते प्रत्ये उत्तर—ए फूलपगर, नगर समरावव्यादि अरिहंतने अर्थे कांइ नहीं, इंद्रां जगवंतने जोग्य छे नहीं एवुं जाणवुं ॥ ६ ॥

हवे कोइ कहेशे साधुने द्रव्यारिहंत वंदनीय छे, तो द्रव्यपूजानो शो विरोध ? ते उपर कहीये छीये जे श्रावक अने साधु तीर्थंकरदेवे दीक्षा लीधी ते वार पछी द्रव्यव्हारे वांदे. एतावता जे उत्सर्गमार्गे प्रतिमाधरा-

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

दिक श्रावक वर्त्ते छे, अने साधु ए बेहुने जगवंत चिहुं निक्षेपे वंदनीय पूजनीय छे. तथापि व्यवहारे दीक्षा लीधा अनंतर वांदे. परमार्थे ए जे प्रत्यक्ष विजयवंत जगवंतने जेम दीक्षा लीधे वांदे तेमज प्रतिमाने विषे जगवंत दीक्षा वस्थाये वांदे, अने ते वारे तो इव्यस्तवनो अवसर नथी दीसतो एवुं जाणवुं ॥ ७ ॥

जावावस्थानी विधि देखाडीए छीए.—जेवारे जगवंत समवसरणने विषे बेठा छे तेवारे जे कोइ गृहस्थ मनुष्य वांदवा आवे, तेवारे अजिगम पांच साचवे, तेमां प्रथम अजिगमे सचित्तइव्य छांडे, हमणां तेहज जावावस्थागणी सचित्तादिके पूजा करे करावे, साधु हुंता ए विधि जाणीती नथी ॥ ८ ॥

गुरुना विरहजणी गुरु थाप्या, तेह सावद्य सहु टाले ॥
जगजीवन जिन नायक आमल, छहयकाय नहु पाले ॥
॥ कुगुरु० ॥ ए ॥

न्हाणविलेप कुसुमदीपादिक, जोग योग जो कहीए ॥
हरिहर जिनवर कोइ न अंतर, जवशिव विगते न लहिये
॥ कुगुरु० ॥ १० ॥

साची जगति सुगुरु उपदेशे, अरिहंत चैत्य आराधे ॥
अरिहंतजावे जाव अरि जीपी, ते परमारथ साधे ॥
॥ कुगुरु० ॥ ११ ॥

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

अर्थः—हवे द्रव्यस्तव विरोध प्रत्यक्षे साधुने देखाडे छे. गुरुने विरहे गुरुनी स्थापना करी ते स्थापना गुरु आगळ क्रियासमस्त साचवे छे, त्यां सावद्यपूजा कोइ करतो दीसतो नथी, एतावता ए जावार्थ. मनशुं एम जाणे ए साक्षात् संजमधारी गुरु बेठा छे ते आगल ए क्रिया करुं छुं, तेवारे गुरुनी दीक्षावस्थानी जावना मनमां आवे छे; तेटला माटे त्यां सावद्य कोइ करतो नथी. तथा गृहस्थ स्थापनाने विषे एम विचारे ए मारा गुरु द्रव्यपणे वर्त्ते छे, ते एवुं जावतो गृहस्थ द्रव्यपूजा करतो पण विधि अतिक्रमे नहीं. परं जावावस्थाये द्रव्यावस्थानी पूजा ए असमंजस. जेम गुरुनी स्थापना तेम अरिंहतनी स्थापना एम विचारवुं. ॥ ए ॥

हवे द्रव्यावस्था जावावस्था एकपणे विचारतां दोष कहे छे. स्नान, विलेपन, फूल, दीप, धूपादिक ए समस्त जोगनां अंग दीसे छे, ने जे अवस्था विशेष कल्पना न करीये तो जोग अने जोग एक सरखोज होय, कांइ अंतर नहीं. एम विचारतां परदर्शन अने जैन दर्शनने अंतर कांइ नहीं. जेणे कारणे हरिहरादिक देवपणे कहीजे, गृहस्थपणे कहीजे, तेवारे मुक्तावस्था अने संसारावस्था एनुं पण अंतर न थाय, एम हकेतां

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com

मिथ्यात्वादिक दोष लागे. ते कारणे दीप धूपादि द्रव्यारिहंतने गृहस्थावस्थाये योग्य जाणीये बीये. गृहस्थ तथाप्रकारे करता पण दीसे छे. साधुने दीक्षावस्थाये व्यवहारे वंदनीय छे ते कारणे द्रव्यस्तवनो अधिकार साधुने जाणीता नथी तथा साधुने निषेधवो पण नथी जाणीतो नाटकादिवत् ॥ १० ॥

हवे शुद्ध भक्तिनो फल कहेछे. जे कोइ सुगुरुना उपदेश थकी शुद्ध प्रकारे पूजा जाणी समाचरे ते संसार तरी मुक्ति परमपद साधे ॥ ११ ॥

एते ऽर्हतां चैत्य मुदाहरन्ति
मुक्त्यर्थिनिर्मुक्ति निमित्तमर्च्यम् ।
पुष्पादिपूजां चरितानुवादैः
प्रकाशयन्तो न निषेधयन्ति ॥ १ ॥

इति स्वाध्यायार्थः ॥ शुभंभूयात् ॥ संवत् नयनबाण कलावर्षे कार्त्तिक शुक्ल पंचम्यां लिखिता हेमराजेन.

Shree Sudharmaswami Gyanbhandar-Umara, Surat www.umaragyanbhandar.com